R. K. Advertising
के माध्यम से 'जैन गजट' में विज्ञापन बुक कराने हेतु सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर
(आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni77@gmail.com

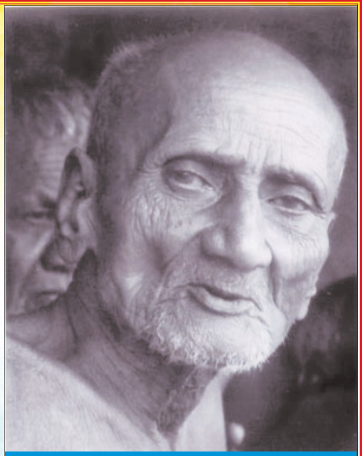

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

भगवान महावीर जन्म कल्याणक विशेषांक-1
1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक
जैन गज़ट
www.Jaingazette.com
वर्ष 32 अंक 22 कुल पृष्ठ 16 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 23 मार्च 2026, वीर नि. संवत् 2552
Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

उत्सव से आत्मचिंतन तक: क्या हम सचमुच तीर्थंकर भगवान महावीर को मानते हैं?

विशेष संपादकीय

राजेन्द्र जैन 'महावीर',
सनावद
सह सम्पादक

वर्षों से हमारा समाज तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्म जयंती और जन्म कल्याणक बड़े ही उत्साह और श्रद्धा से मनाता आया है। भव्य शोभायात्राएँ निकलती हैं, विशाल पांडाल सजते हैं, सैकड़ों-हजारों लोगों की उपस्थिति में अति भव्य भव्यातिभव्य आयोजन होते हैं। नए-नए मंदिरों का निर्माण बड़ी संख्या में हो रहा है, अनेक स्थानों पर प्रतिमाएँ स्थापित की जा रही हैं। तीर्थयात्राओं की संख्या भी निरंतर बढ़ रही है। आधुनिक सुविधाओं से युक्त धर्मशालाएँ, थ्री-स्टार और फाइव-स्टार जैसी व्यवस्थाएँ भी अब तीर्थों पर दिखाई देती हैं। समाज आर्थिक रूप से समृद्ध है, संगठित है, सक्रिय है। बाहर से देखने पर सब कुछ अत्यंत प्रभावशाली प्रतीत होता है, किन्तु इन सबके बीच एक गंभीर प्रश्न बार-बार मन को मथता है। क्या हम सचमुच तीर्थंकर भगवान महावीर को मानते हैं?

अहिंसा की सूक्ष्मता और हमारा आचरण - जिस अहिंसा की सूक्ष्मतम व्याख्या हमारे धर्म में मिलती है, क्या उसका पालन हम कर रहे हैं? हमारे आचार-विचार, व्यवहार, वाणी और व्यापार क्या सबमें अहिंसा झलकती है? अहिंसा केवल प्राणी हत्या न करने का नाम नहीं है। कठोर वचन भी हिंसा है, द्वेष भी हिंसा है, ईर्ष्या भी हिंसा है, किसी की प्रतिष्ठा को आहत करना भी हिंसा है।

यदि हम प्रतिदिन मंदिर जाएँ, पूजा-अर्चना करें, पर भीतर क्रोध, मान, माया, लोभ और प्रतिस्पर्धा का भाव बना रहे-तो क्या वह तीर्थंकर भगवान महावीर की वाणी का पालन है?

अपरिग्रह बनाम परिग्रह – तीर्थंकर भगवान महावीर ने अपरिग्रह का संदेश दिया, आवश्यकता से अधिक संचय न करना, आसक्ति न रखना, पर आज स्थिति क्या है? बड़े-बड़े भवन, भव्य आयोजन, प्रतिस्पर्धा- ''किसने अधिक किया'', ''किसका आयोजन बड़ा था'', ''किसने अधिक दान दिया'' - ये चर्चाएँ अधिक दिखाई देती हैं। क्या धर्म प्रदर्शन का माध्यम है? या आत्मसंयम का मार्ग? - यदि धर्म के नाम पर भी अहंकार बढ़े, तो वह धर्म नहीं, परिग्रह का ही एक रूप है।

शेष पृष्ठ 2 पर.....

WONDERFUL 12 Nights / 13 Days
EUROPE
8 Nov यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
PARIS, SWITZERLAND, ITALY
AUSTRALIA
21 Jan 13 Feb 7 Mar
आस्ट्रेलिया जैन मंदिर के दर्शन 9 Nights / 10 Days
Melbourne, Sydney, Gold Coast, Brisbane
AMERICA (USA)
Dep in 2026 अमेरिका जैन मंदिर के दर्शन
12 Nights / 13 Days
Niagara Falls, San Francisco, New Jersey
New York, Los Angeles, Las Vegas, Washington
VAYUDOOT WORLD TRAVELS PVT. LTD.
100% Pure Vegetarian Jain Food
ला: नेमचन्द जुगल किशोर जैन तीर्थ यात्रा संघ
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

869 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा
शांतिधारा का प्रसारण
f LIVE
आरती : 7:15 - 7:45 AM
शांतिधारा : 8:30 AM
@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9783016885
नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।
हस्तेड़ा जैन मंदिर
दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
संपर्क सूत्र:
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री)
9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष)
095880-20330

JK MASALE SINCE 1957
Buy online on jkcart.com

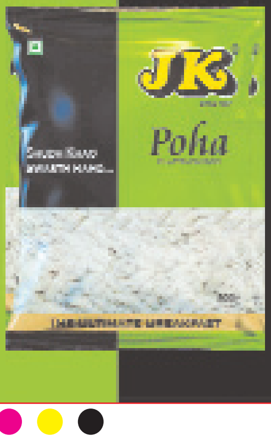

– Breakfast Matlab –
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...

अहिक्षेत्र रेलवे स्टेशन का नाम तीर्थंकर पारसनाथ के नाम पर रखने की मांग

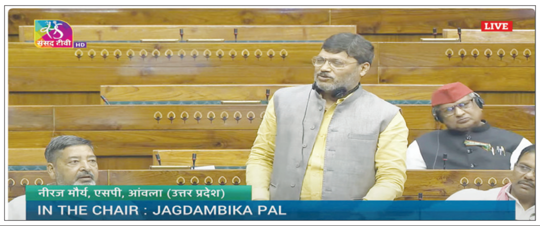

भगवान पारसनाथ की स्थली, तिखाल नगरी, बरेली, रामनगर, अहिक्षेत्र रेलवे स्टेशन का नाम तीर्थंकर पारसनाथ के नाम पर रखने की मांग समाजवादी पार्टी सांसद नीरज मौर्य ने रेल मंत्री के समक्ष संसद में उठाई।

शेष पृष्ठ 01 का....

क्या तीर्थंकर भगवान महावीर ने भव्यता को धर्म कहा था? हम स्वयं से प्रश्न करें-क्या तीर्थंकर भगवान महावीर ने मंदिर निर्माण को ही धर्म का केंद्र बताया? क्या किसी आगम में यह उल्लेख है कि धर्म की प्रभावना केवल विशाल आयोजनों से होगी?

क्या तीर्थयात्राएँ मात्र पर्यटन बनकर रह जाएँ, तो वे आत्मोन्नति कर पाएँगी?

क्या आधुनिक सुविधाएँ ही मोक्षमार्ग का प्रमाण हैं?

तीर्थ अवश्य जाएँ, पर तीर्थ का उद्देश्य है-मन का परिवर्तन। यदि यात्रा से लौटकर हमारा व्यवहार नहीं बदला, तो यात्रा अधूरी रह गई।

तीर्थयात्रा-परिणामों की परीक्षा - आज अनेक संगठन और मंडल निरंतर तीर्थयात्राएँ आयोजित करते हैं। यह शुभ कार्य है। परंतु प्रश्न यह है - यात्रा के बाद हमारे परिणामों में कितना परिवर्तन आता है?

यदि यात्रा के दौरान ही भोग-विलास, खान-पान, दिखावा और प्रतिस्पर्धा अधिक हो जाए तो आत्मचिंतन कहाँ रहेगा?

तीर्थ का मार्ग कठिन तप का मार्ग रहा है। संत-मुनियों ने कष्ट सहकर यात्राएँ कीं। आज यदि हम सुविधा और प्रतिष्ठा के लिए जाएँ, तो क्या वह भाव तीर्थंकर भगवान महावीर की शिक्षाओं के अनुरूप है?

मंदिर पहले मन में बने, मंदिर निर्माण पुण्य का कार्य है। प्रतिमा स्थापना श्रद्धा का प्रतीक है परंतु तीर्थंकर भगवान महावीर का सच्चा मंदिर हमारा मन है।

यदि मन निर्मल नहीं, यदि भीतर राग-द्वेष है, यदि हम क्षमा नहीं कर पाते तो बाहरी निर्माण अधूरा और उद्देश्यहीन है।

मंदिर का शिखर जितना ऊँचा हो, उससे अधिक ऊँचा हमारा चरित्र होना चाहिए।

धर्म या प्रतिस्पर्धा? - आज ''पहली बार'', ''सबसे बड़ा'', ''ऐतिहासिक आयोजन'', ''अभूतपूर्व कार्यक्रम'' - ऐसे शब्दों का प्रयोग बढ़ गया है।

पर धर्म स्पर्धा का विषय नहीं है।

धर्म विनम्रता है।

धर्म मौन साधना है।

धर्म भीतर की यात्रा है।

यदि आयोजन के पीछे अहंकार, राजनीति या गुटबाजी हो तो वह भावना धर्म की नहीं रह जाती। हम तीर्थंकर भगवान महावीर को मानते हैं-पर क्या उनकी मानते हैं?

सच तो यह है कि हम तीर्थंकर भगवान महावीर को बहुत मानते हैं -

उनकी पूजा करते हैं, उनकी जय-जयकार करते हैं, उनके नाम से आयोजन करते हैं परंतु क्या हम उनकी बात मानते हैं?

अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह, समता-ये केवल शब्द न रहें, जीवन का आधार बनें। तीर्थंकर भगवान महावीर ने कहा था-अपने भीतर के विकारों को जीतना ही वास्तविक विजय है। बाहर की विजय नहीं, भीतर की विजय आवश्यक है।

आज की आवश्यकता - आज आवश्यकता है-मंदिरों से अधिक मनों को जोड़ने की, आयोजनों से अधिक आत्मचिंतन की, प्रदर्शन से अधिक अभ्यास की, भीड़ से अधिक भावना की।

परम पूज्य आचार्यश्री विद्यासागर जी का कथन है - यदि उपवास या एकाशन न हो सके तो मत करना, लेकिन किसी भी प्राणी के प्रति दुराभाव मत रखना।' यदि विशाल दान न दे सकें, तो भी क्षमा और करुणा का भाव अवश्य रखें।

प्रश्न यह नहीं कि समाज क्या कर रहा है, प्रश्न यह है कि मैं क्या कर रहा हूँ?

तीर्थंकर भगवान महावीर जयंती केवल उत्सव न रहे, वह आत्मपरीक्षण का अवसर बने।

आइए, संकल्प लें - हम तीर्थंकर भगवान महावीर को केवल नाम से नहीं, केवल मंदिरों से नहीं, केवल आयोजनों से नहीं, अपने आचरण से मानेंगे तभी हमारा ''तीर्थंकर भगवान महावीर को मानना'' सार्थक होगा।

तीर्थंकर भगवान महावीर के जन्म कल्याणक

पिता की परचून दुकान जैन बेटी बनी है IAS

UPSC सिविल परीक्षा 2025 का रिजल्ट घोषित हो गया है, यूपी की शामली की रहने वाली आस्था जैन श्री 9वी रैंक है। आस्था ने पहली बार में ही 2025 में UPSC क्वालीफाई किया था, इस दौरान उनकी 131वीं रैंक मिली थी। IAS बनने के बाद आस्था का मन तो IPS बनने का था इसलिए उसने IPS की ट्रेनिंग से ही छुट्टी लेने के बाद सिविल सर्विस की पढ़ाई पुनः शुरू किया और इस बार की परीक्षा में 9वीं रैंक प्राप्त किया। आस्था ने यह मुकाम सेल्फ स्टडी करके प्राप्त किया है। आस्था का परिवार कांधला में रहता है। पिता की परचून की दुकान और मां हाउस वाइफ है। आस्था तीन बहन एक भाई हैं। बड़ी बहन डॉक्टर, दूसरे नंबर पर आस्था और तीसरी बहन डॉक्टरी की पढ़ाई कर रही है।

।। श्री महावीराय नमः।।

हिंसा पीड़ित राष्ट्र राह महावीर की तकता है।
वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है।।

भगवान महावीर स्वामी की जयन्ति पर हार्दिक कोटिशः बधाईयां

महावीर प्रसाद-श्रीमती सुलोचना जैन
मनोज कुमार-श्रीमती अंजली जैन
दीपक-श्रीमती विनीता जैन
अमिशी, अद्विका, शिवांश जैन
63 जगदंबा नगर, हल्दी घाटी मार्ग
प्रताप नगर, जयपुर (राज.) 302023
मो. 8875452555, 9549789555

विज्ञापन प्रेषक - पारस जैन, संवाददाता, कोटा (राज.)

भगवान महावीर जयंती पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित

SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.

OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

भगवान श्री महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक पर विशेष

सर्वोदय के प्रणेता- भगवान श्री महावीर

श्रीमति उमा मालवीय, नई दिल्ली

(लेखिका - भारतीय संविधान निर्मात्री सभा के सदस्य, पूर्व केन्द्रीय मंत्री, राष्ट्रीय श्रम आयोग के अध्यक्ष, जैन समाज के गौरव श्री रतनलाल मालवीय की पुत्रवधु प्रख्यात समाज सेविका हैं। सागर के प्रतिष्ठित मलैया घराना के पारिवारिक सदस्य श्री मालवीय हैं)

आज आवश्यकता इस बात की है कि भगवान महावीर के दर्शन को समझें तथा उनके उपदेशों को अपने आचार में क्रियान्वित करें। ऐहिक जीवन के अभ्युदय और पारलौकिक जीवन में निःश्रेयस की प्राप्ति के लिए भगवान महावीर ने सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र रूपी रत्नत्रयी का जो मार्ग प्रशस्त किया वह गृहस्थ एवं वीतरागी श्रमण दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। भगवान महावीर अहिंसा के प्रतिमूर्ति थे। उनके द्वारा प्रतिपादित अहिंसा के सिद्धान्त को अधिक से अधिक प्रचारित किया। भगवान महावीर का जीवन अनन्त वीर्य से ओतप्रेत, सत्य और अहिंसा के शाश्वत धर्म के वे प्रतीक बने ऐसे उन भगवान को जिन और वीर कहना सार्थक है। भगवान महावीर ने प्राणी मात्र के प्रमाद रहित होकर जीवन जीने का पद प्रदर्शन किया। वीतराग प्रभु ने कहा कि शुभ कार्यों के द्वारा पुण्य का सर्जन और अशुभ कार्यों से पाप का, भूखे को भोजन, प्यासे को पानी, आश्रयहीन को ठहरने का स्थान, निर्वस्त्र को वस्त्र आदि देने से ही पुण्य का सर्जन होता है। साधु को सुख-दुःख, लाभ-अलाभ, जीवन-मरण, निन्दा-प्रशंसा और मान-अपमान में सम भाव रखना चाहिए।

महान विभूतियां हजारों वर्षों में कभी जन्म लेती हैं, भगवान महावीर ऐसे ही तेजस्वी महापुरुष जिनके सुकृत्यों की सुवास युगों-युगों तक व्याप्त रहेंगी। उन्होंने अहिंसा, अपरिग्रह व अनेकांत सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया वे मानवता के लिए सदैव प्रकाश स्तम्भ हैं।

अपने में भगवान देखना और हर आत्मा को अपने समान देखना यही भगवान महावीर का आत्मा से परमात्मा बनने का धर्म। भगवान महावीर ने अपने उपदेशों में प्रचारित किया कि सभी जीव बराबर हैं, जो पुरुषार्थ करें वह भगवान बन सकता है, महावीर का धर्म साम्प्रदायिक, व्यक्ति विशेष का नहीं वह तो प्राणी मात्र का है जो भगवान महावीर के उपदेशों को ग्रहण करें वही उनका अनुयायी हैं। आज सारा विश्व परस्पर हिंसा, आतंकवाद, छल-कपट, व्यभिचार, भ्रष्टाचार जैसी कुरीतियों से व्याप्त हैं। ऐसे संकटों से उभार भगवान महावीर का सिद्धान्त जो परस्पर में 'जियो और जीने दो' का संदेश देता हैं। भगवान महावीर के सिद्धान्तों की सर्वाधिक आवश्यकता तो आज है जहाँ सारा विश्व विद्वेष की भावना से जल रहा, ऐसे माहौल में कोई तारणहार हैं तो वह महावीर के सिद्धान्त और उनका सर्वोदयी शासन। भगवान श्री महावीर की अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य परिग्रह के सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुंचाने का पुरुषार्थ सद्भावना का प्रतीक हैं।

भगवान महावीर ने आत्म साधना के उच्चतम अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करके श्रमण संस्कृति के परिष्कार की प्रक्रिया को चरम सीमा तक पहुंचा दिया और उसकी उत्कृष्ट अपरिग्रह की परम साधना के कारण धर्म के लिए ''जैन'' शब्द का व्यवहार प्रारंभ हुआ उनके काल में धर्म के इस नामकरण का अभिप्राय यह नहीं कि वे उसके प्रवर्तक हैं वे इस परम्परा के चौबीसवें तीर्थंकर ही हैं। श्री महावीर के पूर्ववर्ती तेइस तीर्थंकरों के द्वारा धर्म व्यवहार के परिष्कार की इस सांस्कृतिक प्रक्रिया को निरन्तर गतिमान किया है। परिष्कार की यह प्रक्रिया भगवान महावीर के बाद भी निरन्तर चल रही और उससे जैन धर्म का निखार होता रहा, उसी के कारण वह दूसरों के घोर विरोध में भी टिका रहा।

मानवीय एवं आर्थिक असमानता के साथ-साथ वैचारिक मतभेद भी समाज में द्वन्द्व को जन्म देते हैं जिस कारण समाज रचनात्मक प्रवृतियों को विकसित नहीं कर सकता। वैचारिक प्रक्रिया मानव की सृजनात्मक मानसिक शक्तियों का परिणाम होता है पर उसको न समझने से मनुष्य के आपसी मतभेद संकुचित संघर्ष के कारण बन जाते और इससे समाज की शक्ति विघटित होती है, समाज के इस पक्ष को भगवान महावीर ने गहराई से समझा और अनेकान्त सिद्धान्त को प्रतिपादित किया, जिसमें मतभेद भी सत्य को देखने की दृष्टियाँ बन गई और व्यक्ति समझने लगा कि मतभेद-दृष्टि पक्षभेद के रूप में ग्राह्य है, मतभेद संघर्ष का कारण नहीं, किन्तु विकास का द्योतक है, अनेकान्त के इस सत्य विभिन्न पक्षों को समन्वित करने का ऐसा मार्ग खोल दिया जिससे सत्य की खोज किसी एक की बपौती नहीं रह गई, जैन धर्म के इस वैचारिक उदारता ने समाज में व्याप्त अनुचित संघर्ष को समाप्त कर दिया। अनेकान्त समाज का गत्यात्मक सिद्धान्त जो जीवन में वैचारिक गति को उत्पन्न करता, संकीर्णताओं की बंद खिड़कियों को खोलकर उदारता की हवा से समाज के स्वास्थ्य को ठीक रखता है। आनंद की अनुभूति बाहरी साधनों से नहीं, स्वयं के भाव और दृष्टिकोण से होती है। अहिंसा, अनेकांतवाद और अपरिग्रह विचार धाराओं पर जैन धर्म पूरे विश्व में व्याप्त हैं, भगवान महावीर ने ब्राह्मणवाद के यज्ञ-याग को करीब से देखा, यज्ञ में राजा और प्रजा, धर्म के नाम पर पशुओं की बलि दी जाती, होने वाली हिंसा उन्हें मान्य नहीं थी। आर्थिक विषमता का अभिशाप उस युग में त्रास का कारण बना, ऊंच-नीच का भेदभाव, दास-दासियों का क्रय-विक्रय होता, नारी जाति की दुर्दशा भगवान महावीर ने नारियों की मंडियां लगती देखी, दासों की मंडियां उस समय के सभ्य समाज का हिस्सा बन गयी थी। वर्णों में समाज विभाजित जैन धर्म का प्राचीन स्वरुप बिखर चुका था लोग धर्म के नाम पर मांसाहार का प्रयोग करते समाज के इस दूषित वातावरण ने महावीर की चिन्तन शक्ति को झकझोर दिया वह निरन्तर अभावग्रस्त और दयनीय मानवता के प्रति, भगवान महावीर ने पाशविक मनोवृतियों की दासता से निकालकर नैतिक जागरण के पथ पर चलने को प्रेरित, आत्मानुभूति और आध्यात्मिक मूल्यों का सृजन कर सामाजिक क्रान्ति के तेजस्वी अग्रदूत बने। भगवान महावीर का जीवन मानवीय मूल्यों की स्थापना की अनवरत और शाश्वत ज्योति की कहानी है।भगवान महावीर अहिंसा के सर्वोच्च प्रवक्ता, युग दृष्टा, युग पुरुष उन्होंने मानव कल्याण के लिए जीवन समर्पित कर दिया। हिंसा, पशु बलि, जातीय विषमता का भेदभाव, उस युग में भगवान का जन्म हुआ उन्होंने उस युग का इतिहास ही बदल दिया। निस्संदेह महावीर गुणों की पराकाष्ठ हैं, इसीलिए वे गुणातीत भी हैं। हम उनकी प्रतिबद्धता एक कण भी उठा अपने जीवन में सजा लें तो हमारा जीवन आनंदमय और सार्थक हो जाये।

संपूर्ण मानवता को प्रेरणा देते भगवान श्री महावीर जैसे दिव्यात्मा युग-युगान्तर तक याद किये जाते रहेंगे।

परम पूज्य, वात्सल्य वारिधि, पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के चरणों में शत् शत् नमन

आचार्य वर्धमान सागर वचन

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन
ऐसे आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन

उम्मीद बहुत तकलीफ देती है पर न जाने क्यों फिर भी उम्मीद रहती है

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

श्रीपाल सबलावत, सुरेश सबलावत, हुलासचंद सबलावत परिवार रेडिप्रिण्ट जयपुर

सुधांसु कासलीवाल अध्यक्ष श्री महावीर जी
विवेक काला, (कालाजी ज्वैलर्स) जयपुर
अशोक कटारिया, निवाई
राजेन्द्र कटारिया, अहमदाबाद

धर्मचंद पहाड़िया जयपुर राज. केन्द्रीय कार्याध्यक्ष तीर्थ संरक्षिणी
इन्द्रमणी देवी चूड़ीवाल, निखार, जयपुर
कैलाशचंद पाटनी किशनगढ़ (उरसेवा वाले)
Caption Tours And Travels Co. Kuwait (Mr. Rishabh Pachori, Mr.Mayur Pachori, Parsola)

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

खानिया जी के श्री वासुपूज्य और श्री चंद्रप्रभ भगवान जहाँ अनेक अतिशय हुए -आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

राजेश पंचोलिया, इंदौर

खानिया जयपुर के 1008 श्री वासू पूज्य जिनालय के चमत्कारी अतिशय कारी 1008 श्री चंद्रप्रभ भगवान जिनके समक्ष शांति भक्ति का पाठ करने से मुनि श्री वर्धमान सागर जी को सन 1969 में नेत्र ज्योति वापस प्राप्त हुई

3 मार्च को खानिया जयपुर के 1008 श्री वासू पूज्य जिनालय के चमत्कारी अतिशय कारी 1008 श्री चंद्रप्रभ भगवान के दर्शन करते हुये आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज

खानिया, जयपुर। प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण मूल बाल ब्रह्मचारी पट्ट परंपरा के तृतीय पट्टाधीश आचार्य श्री धर्मसागर जी से दीक्षित पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज का 34 साधु सहित उपसर्ग निवारण स्थल अतिशय क्षेत्र खनिया जी में भव्य मंगल प्रवेश 13 मार्च को हुआ। राणा जी नसिया के पदाधिकारियों ने आचार्य श्री के चरण प्रक्षालन कर मंगल आरती की। सर्वप्रथम मानस्तंभ के दर्शन कर मूलनायक श्री वासुपूज्य भगवान के दर्शन कर अभिषेक देखा मंदिर में अन्य वेदियों पर विराजित श्रीजी के दर्शन किए।

आचार्य श्री ने संघ के साधुओं और समाज को स्वयं बताया कि सन 1969 में दीक्षा के 4 माह बाद हम पर नेत्र ज्योति जाने का उपसर्ग इसी जिनालय के 1008 श्री चंद्रप्रभ भगवान समक्ष शांति भक्ति का पाठ करने से नेत्र ज्योति वापस आई। उपस्थित सभी साधु समाज जन ने चंद्रप्रभ भगवान और आचार्य श्री की जयकार किया। संघ चैत्यालय में अभिषेक के बाद धर्म सभा में आचार्य श्री ने बताया कि 24 तीर्थकरों में पांच बाल ब्रह्मचारी भगवान हुए जिसमें मंदिर के मूलनायक श्री वासुपूज्य भगवान प्रथम बाल ब्रह्मचारी हुए जयपुर में सैकड़ों मंदिर बने हैं किंतु खनिया जी के इस मंदिर में अनेक अतिशय हुए हैं। हम सहित अनेक पूर्वाचार्य ने दर्शन किए और चातुर्मास भी किया है। प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर जी महाराज ने तीन चातुर्मास खनिया जी में किया, उन्हें आचार्य पद भी यहीं खनिया जी में प्राप्त हुआ और उनकी समाधि भी यहीं खनियाजी में हुई। द्वितीय पट्टाचार्य श्री शिवसागर जी को भी आचार्य पद यहीं खनिया जी में प्राप्त हुआ। राजेश पंचोलिया के अनुसार आचार्य श्री ने बताया कि अनेक साधुओं की यह दीक्षा स्थली भी रही है। आचार्य कल्प श्री श्रुतसागर जी महाराज ने मूलनायक श्री वासु पूज्य भगवान के समक्ष आचार्य पद का हमेशा के लिए त्याग भी यही खनियाजी में किया था। यहां के भगवान का इतना अतिशय है कि तीन बार भगवान की प्रतिमा चोरी हुई किंतु वह पुनः वापस प्राप्त हुई। इसी जिनालय में श्री पदमप्रभ भगवान के समक्ष हमने नेत्र ज्योति जाने के बाद शांति भक्ति का पाठ किया तो हमारी नेत्र ज्योति वापस प्राप्त हुई। देश के मूर्धन्य प्रख्यात विद्वानों की तत्वचर्चा खानियाजी में हुई जिसमें सोनगढ़ विचारधारा वालों से धार्मिक तत्व चर्चा हुई जिसमें आचार्य शिवसागर जी ने अपने तार्किक विचार उद्बोधन दिया जिसे सभी ने मान्य किया। देश में यह तत्व चर्चा खानिया तत्व चर्चा के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त हुई। इस अवसर पर मुनि श्री हितेंद्र सागर जी का उपदेश हुआ। मंच संचालन श्री कमलबाबू ने किया आचार्य संघ का कुछ दिनों तक अल्प प्रवास रहेगा।

महावीर जयन्ती के उपलक्ष में धावास जैन मंदिर में आयोजित हुआ रक्तदान शिविर

राष्ट्रीय संवाददाता, शेखरचंद पाटनी

जयपुर। पूरे राजस्थान में आगामी 30 मार्च को महावीर जयंती का पर्व अत्यंत श्रद्धा एवं उल्लास के साथ विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों सहित मनाया जाएगा। धावास मंदिर समिति के संरक्षक एवं निर्माण संयोजक जय कुमार जैन-बड़जात्या, अध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार बैद एवं मंत्री मितेश ठोलिया ने बताया कि राजस्थान जैन सभा एवं मंदिर समिति के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को निशुल्क चिकित्सा जांच शिविर एवं महा रक्तदान शिविर का आयोजन मंदिर प्रांगण में आयोजित हुआ।

इस आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य अशोक शर्मा, वरिष्ठ कांग्रेस नेता रामनिवास कटारिया तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में पृथ्वीराज नगर जन विकास समिति के अध्यक्ष अनिल माथुर एवं सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. संजय छाबड़ा की गौरवमयी उपस्थिति रही। सह मंत्री मनोज जैन-पचेवर एवं नरेन्द्र गोधा ने बताया कि मंदिर समिति के परम संरक्षक एवं गुरु भक्त विकास बड़जात्या, कामां वाले ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। सामाजिक सेवा के इस पुनीत कार्य में समाजसेवी उपेन्द्र बोथरा, विनय रंजन मित्तल, गजानन्द जांगिड़, ओमप्रकाश जाखड़, दिनेश राव, डा. कैलाश प्रकाश कुमावत आदि की सक्रिय भागीदारी रही।

सन्मति सुनीलम् महिला मण्डल की सीमा बड़जात्या, शिमला जैन-निवाई, डिम्पल जैन, खुशबू छाबड़ा, प्रियंका गंगवाल, रीता जैन, पायल बड़जात्या, सीमा गोधा, अल्पना ठोलिया, शिमला जैन, निकिता जैन, लेखा जैन, अंजली बैद, दीपा सौगाणी, पूजा ठोलिया, निशा ठोलिया, आशा बैद, अनीता छाबड़ा आदि ने पूरी व्यवस्थाओं को बखूबी अंजाम दिया। कार्यकारिणी सदस्य नरेश सौगाणी एवं विनय जैन-सारसोप ने अवगत कराया कि निशुल्क चिकित्सा जांच शरीर में शिशु एवं बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. विजय चौधरी, पूर्व चिकित्सा निदेशक डॉ. आर. एस. छीपी, एक्यूप्रेशर विशेषज्ञ डॉ. महेश अग्रवाल सहित वेलनेस कोच हर्षा एवं स्वाति ने सेवाएं दीं। श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जैन समाज समिति, धावास के सभी पदाधिकारी, सदस्यगण एवं पूरा जैन समाज भगवान महावीर के जियो और जीने दो के सिद्धांत का अनुकरण करते हुए समाजसेवा के इस पुनीत कार्य में तत्परता से सहभागी बना।

राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष सुभाष पांडे महामंत्री मनीष वेद उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा रक्तदान शिविर के मुख्य संयोजक राजीव पाटनी, सह संयोजक अनिल छाबड़ा एवं पवन पांड्या ने भी रक्तदान शिविर में शिरकत कर धावास जैन समाज के प्रति आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम में युवा शक्ति का भरपूर सहयोग मिला जिसमें अभिषेक गर्ग, आशीष बैद, अभिषेक गंगवाल, अर्पित जैन, पं. विशाल जैन, आशीष छाबड़ा की मुख्य भूमिका रही।

निशुल्क चिकित्सा जांच शिविर में एक सौ बीस लोगों ने स्वास्थ्य जांच करवाई और चालीस यूनिट रक्तदान किया गया।

वात्सल्य मूर्ति, कवि हृदय राजकीय अतिथि, आचार्य श्री 108 शशांक सागर जी मुनिराज के चरणों में शत् शत् नमन् आचार्य श्री आदिनाथ भवन, मीरा मार्ग, मानसरोवर जयपुर में विराजमान हैं।

आचार्य शशांक सागर वचन

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थो की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन,
ऐसे आचार्यश्री शशांक सागर जी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन

यकीन मानो वो सब कुछ लौटकर आएगा
जो आप किसी को आज दे रहे हो

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

श्रेष्ठी विनित चांदवाड़ (सिद्धार्थ नगर, जयपुर)
श्रेष्ठी ऋषभ कुमार सेठी (अध्यक्ष तिलक नगर जयपुर)
श्रीमती राखी गंगवाल, (आदिनाथ नगर, जयपुर)
अनिल कुमार पाण्ड्या (बनेठा वाले)
गजेन्द्र बड़जात्या, (कामा वाले) जयपुर

श्रेष्ठी महेश-राकेश कुमार ठोल्या (मारूजी का चौक, जयपुर)
पवन कुमार बड़जात्या मरवावाले किशनगढ़
अशोक चांदवाड (वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर)
मधु जैन अध्यक्षा-श्री दिग. जैन मंदिर प्रतापनगर सेक्टर-3
कमल चंद छाबड़ा अध्यक्ष 1008 श्री शांतिनाथ दिग. जैन मंदिर मान्यवास, मानसरोवर जयपुर

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

भगवान महावीर जयंती पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित

परम पूज्य वात्सल्य वारिधि, जिन धर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज एवं समस्त मुनि संघ के चरणों में

शत् शत् नमन, शत् शत् वंदन

नमनकर्ता: राजेन्द्र कुमार जैन, भागचन्द्र जैन एवं समस्त छाबड़ा परिवार

'Manik Ratan Bldg', By lane Kamal Patrol Pump, H. B. Road, Machkhowa, Guwahati - 781009

Jain Group

Estd-1898 | ।।श्री आदिनाथाय नमः।। | Parent Mahasabha Estd- 1892

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा चेरिटेबल ट्रस्ट

Shree Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha Charitable Trust

आयकर अधिनियम की धारा 80-G के अन्तर्गत छूट प्राप्त

5, Khandelwal Digamber Jain Mandir Complex, Raja Bazar, Cannaught Place, New Delhi - 110001
T. No. :- 011-23344668, Fax No. :- 011-23344669
e-mail : digjainmahasabha@gmail.com, digjainmahasabha@yahoo.com, www.digjainmahasabha.org

dedicated for preservation of ancient religion, culture & traditions

10 मार्च 2026

श्रीयुत

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा चेरिटेबल ट्रस्ट की मैनेजिंग कमेटी की बैठक दिनांक 10 मार्च 2026, मंगलवार को सायं 4:00 बजे स्थानः 5, खण्डेलवाल जैन मन्दिर कॉम्पलैक्स, राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001 पर ट्रस्ट के कार्यालय में सम्पन्न हुई, जिसमें सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि ट्रस्ट की साधारण सभा की मीटिंग ट्रस्ट की नियमावली के पॉइंट 13 (N) के अनुसार, दिनांक 04 अप्रैल 2026, शनिवार को सायं 3:00 बजे, 5 खण्डेलवाल जैन मन्दिर कॉम्पलैक्स, राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में आयोजित की जायेगी।
इस साधारण सभा की बैठक में निम्नलिखित विषयों पर विचार विमर्श किया जाएगा।

एजेण्डा

1. मंगलाचरण।
2. ट्रस्ट की वर्तमान आर्थिक स्थिति पर विचार विमर्श एवं ट्रस्ट को सशक्त बनाने पर चर्चा।
3. मैनेजिंग कमेटी के नये सदस्यों का चुनाव।
4. ट्रस्ट में नये ट्रस्टी बनाने हेतु चर्चा।
5. अन्य विषय अध्यक्ष की अनुमति से।

अतः आप सभी ट्रस्टियों से विनम्र निवेदन है कि समय पर उपस्थित होकर अपने अमूल्य सुझाव एवं मार्गदर्शन प्रदान करें, जिससे महासभा चेरिटेबल ट्रस्ट को और अधिक सुदृढ़ बनाया जा सके।
सधन्यवाद।

भवदीय,

गजराज जैन गंगवाल
एग्जीक्यूटिव ट्रस्टी श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा चेरिटेबल ट्रस्ट
राष्ट्रीय अध्यक्ष -श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

सम्मान एवं स्वागत

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा चैरिटेबल ट्रस्ट के कार्यालय (स्थानः श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा चैरिटेबल ट्रस्ट कार्यालय 5, खण्डेलवाल जैन मन्दिर कॉम्प्लेक्स, राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली - 110001) में नये सम्मानित ट्रस्टी आदरणीय श्री जिनेन्द्र जैन नरपतिया जी के आगमन पर उनका हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। इस गरिमामय अवसर पर श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय श्री गजराज जैन गंगवाल, ट्रस्टी श्री पवन जैन गोधा, ट्रस्टी श्री गजेन्द्र जैन बज, ट्रस्टी श्री हरकचंद सोगानी, ट्रस्टी श्री इन्द्रेश जैन, ट्रस्टी श्री संदीप जैन, श्री पुनीत जैन एवं अन्य सम्मानित महानुभावों द्वारा उन्हें प्रशस्ति-पत्र एवं पहचान-पत्र (आई-कार्ड) भेंट कर सम्मानित किया गया। यह आयोजन अत्यंत स्नेहपूर्ण एवं गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ, जिसमें सभी उपस्थित सदस्यों ने उन्हें शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए उनके उज्ज्वल एवं सफल कार्यकाल की मंगल कामना की।

जैन गजट की सदस्यता, विज्ञापन या सहयोग राशि 'जैन गजट' के पक्ष में पंजाब नेशनल बैंक, राजेन्द्र नगर शाखा, लखनऊ- 226004 उ.प्र. में सेविंग खाता संख्या 2405000100102500 (RTGS/NEFT IFSC CODE - PUNB 0185600) में आनलाइन/चैक द्वारा जमा कराकर डिपोजिट स्लिप सहित अपने पूर्ण नाम-पते, पिन कोड सहित निम्न पते/वाट्सअप/ईमेल पर भेजकर सूचित करने की कृपा करें-

जैन गजट कार्यालय- श्री नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004
मोबा./वाट्सअप- 7607921391, मोबा. 7505102419
Email: jaingazette2@gmail.com

पूज्य मुनिश्री विष्णु सागर जी महाराज की स्मृति में विनयांजलि सभा का आयोजन

यह सभा नई दिल्ली के मावलंकर हॉल में सम्पन्न हुई। ज्ञातव्य हो कि मुनिश्री पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री प्रदीप जैन आदित्य के गृहस्थ जीवन के पिताश्री थे। विनयांजलि सभा में आचार्य श्री 108 प्रज्ञसागर जी महाराज एवं लोकेश मुनि, श्री योगभूषण जी महाराज एवं अनेक मुनियों के सानिध्य में संपन्न हुई। जिसमें समाज के गणमान्य श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल, ग्लोबल महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जमनालाल हपावत, मुंबई, तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्मू प्रसाद जैन, श्री दिगंबर जैन परिषद के श्री पुनीत जैन, श्री दिगंबर जैन महासमिति के अध्यक्ष श्री मणीन्द्र जैन, श्री स्वराज जैन आदि उपस्थित हुए। विनयांजलि सभा में सांसद श्री मनोज तिवारी, श्री दिग्विजय सिंह पूर्व मंत्री भारत सरकार, श्री प्रमोद तिवारी कांग्रेस नेता एवं श्री प्रदीप जैन पूर्व मंत्री ने दीप जलाकर सभा को प्रारंभ किया। सर्वप्रथम मनोज तिवारी जी ने मुनिश्री विष्णु सागर जी को विनयांजलि अर्पित करते हुए कहा कि प्रदीप जी आदित्य ऐसे धन्य हैं जिन्हें धार्मिक एवं सामाजिक पूज्य पिताजी मिले। धार्मिक भावना से ओतप्रोत आपने रेलवे की नौकरी बड़े ही सहजता से की, मैं उनको अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। आदरणीय श्री दिग्विजय सिंह जी ने कहा कि इस समय वर्तमान में विश्व में अराजकता फैली हुई है। आज देश में अहिंसा की बहुत जरूरत है। भगवान महावीर के सिद्धांत जीओ और जीने दो और सांसद मनोज तिवारी जी के गीत वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है, बिल्कुल सटीक उदाहरण है। प्रमोद तिवारी ने कहा कि मेरा सौभाग्य कि मैने आदरणीय प्रदीप जैन आदित्य के साथ विधानसभा में सहभागिता की, उनके साथ काम किया। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल ने पूज्य मुनिश्री के गृहस्थ जीवन पर प्रकाश डालते हुये महासभा परिवार और अपनी ओर से उन्हें श्रीफल भेंटकर विनयांजलि अर्पित किया। महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री पवन जैन गोधा ने भी पूज्यश्री को श्रीफल भेंटकर अपनी विनयांजलि अर्पित किया। जैन राजनीतिक चेतना मंच के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री हुकुमचंद काका, पूर्व विधायक श्री सुकीर्ति जैन, स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारी श्री सुभाष ओसवाल, श्री अमित राय जैन राष्ट्रीय महामंत्री एवं श्वेतांबर समाज से श्री ललित जैन नाहटा ने पूज्य मुनिश्री को अपनी विनयांजलि अर्पित की।

कषाय का नाप आत्मा को कष्ट की अधिकता या कमी से किया जाता है

संपादकीय

भोगवादी संस्कृति और मानव मूल्य

जैन परंपरा के चिरंतन इतिहास में तीर्थंकरों की परंपरा केवल धार्मिक श्रद्धा का विषय नहीं, बल्कि मानवता के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान की दिशा में एक महान मार्गदर्शक रही है। इस गौरवशाली परंपरा के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक केवल एक ऐतिहासिक या धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि आत्म जागरण का प्रेरक अवसर है। यह दिन हमें स्मरण कराता है कि मनुष्य का वास्तविक उत्कर्ष बाहरी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि आत्मविजय से होता है।

भगवान महावीर का जीवन इस सत्य का उज्ज्वल उदाहरण है कि महावीरता बाहरी पराक्रम में नहीं, बल्कि अंतःकरण की विजय में निहित है। राजवैभव में जन्म लेने के बावजूद उन्होंने जीवन का लक्ष्य सांसारिक सुख-सुविधाओं में नहीं, बल्कि आत्मज्ञान और आत्ममुक्ति में खोजा। तीस वर्षों तक राजमहल में रहते हुए भी उनके अंतर्मन में वैराग्य की चेतना प्रबल रही और अंततः उन्होंने त्याग, तप और साधना का मार्ग अपनाया। बारह वर्षों की कठिन साधना के पश्चात उन्हें कैवल्यज्ञान की प्राप्ति हुई और उसके बाद उन्होंने मानवता को धर्म, करुणा और आत्मसंयम का मार्ग दिखाया।

महावीर का धर्म किसी संकीर्ण परिधि में बंधा हुआ नहीं है। उनका संदेश सार्वकालिक और सार्वभौमिक है। उन्होंने धर्म को कर्मकांड या बाहरी प्रदर्शन का विषय नहीं माना, बल्कि उसे जीवन के आचरण में उतारने का आग्रह किया। समता, सत्य, ईमानदारी, पवित्रता, अपरिग्रह, अनेकांत और अहिंसा-ये वे मूल्य हैं जो महावीर के धर्म की आधारशिला हैं। यदि धर्म मनुष्य के भीतर इन मूल्यों को जागृत नहीं करता, तो वह केवल औपचारिकता बनकर रह जाता है।

आज का युग तीव्र प्रतिस्पर्धा, हिंसा, स्वार्थ और वर्चस्व की मानसिकता से ग्रस्त दिखाई देता है। जीवन की दौड़ में मनुष्य बाहरी सफलता के पीछे भागते हुए अपने भीतर की शांति और संतुलन खोता जा रहा है। ऐसे समय में महावीर का संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो उठता है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि जो मनुष्य स्वयं को जीत लेता है, वही सच्चा विजेता है। इंद्रियों पर नियंत्रण, इच्छाओं का संयम और अहंकार का त्याग-यही वास्तविक महावीरता है।

दुर्भाग्य से आज धर्म का स्वरूप भी अनेक स्थानों पर बाहरी आडंबरों में सीमित होता जा रहा है। मंच, माला और माइक की चमक-दमक में कभी-कभी धर्म का वास्तविक उद्देश्य धुंधला पड़ जाता है। राजनीति, शिक्षा, न्याय और स्वास्थ्य जैसे पवित्र क्षेत्रों में भी नैतिक मूल्यों का ह्रास चिंता का विषय बनता जा रहा है। ऐसे समय में भगवान महावीर का जीवन और उनकी शिक्षाएँ समाज के लिए दीप स्तंभ के समान मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। वे हमें याद दिलाती हैं कि किसी भी स्थायी परिवर्तन की शुरुआत भीतर से होती है।

महावीर बनने का मूल सूत्र है-अहंकार का विसर्जन। 'मैं' की दीवार जब तक बनी रहती है, तब तक प्रेम, करुणा और सह अस्तित्व की भावना विकसित नहीं हो सकती। महावीर का संदेश हमें यही सिखाता है कि विनम्रता, सहनशीलता और आत्मसंयम ही जीवन को सार्थक बनाते हैं। जब मनुष्य अपने भीतर की दुर्बलताओं को पहचान कर उन्हें जीतने का प्रयास करता है, तभी वह वास्तविक प्रगति की ओर अग्रसर होता है।

महावीर जयंती का वास्तविक अर्थ केवल शोभा यात्राओं, उत्सवों या औपचारिक आयोजनों तक सीमित नहीं होना चाहिए। यह दिन आत्म समीक्षा और आत्म परिवर्तन का अवसर है। हमें स्वयं से यह प्रश्न पूछना चाहिए कि क्या हम अपने जीवन में अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह और सहिष्णुता के मूल्यों को स्थान दे पा रहे हैं? यदि नहीं, तो महावीर जयंती का उत्सव अधूरा रह जाएगा।

आज विश्व जिस प्रकार हिंसा, असहिष्णुता और विभाजन की प्रवृत्तियों से जूझ रहा है, उसमें भगवान महावीर की शिक्षाएँ मानवता के लिए आशा का संदेश देती हैं। उनका दर्शन हमें बताता है कि विविधता में सहअस्तित्व संभव है और मत भिन्नता के बावजूद संवाद और समन्वय का मार्ग अपनाया जा सकता है। अनेकांत का सिद्धांत आज के वैश्विक समाज के लिए अत्यंत उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान करता है। समाज में बढ़ती विखंडन की प्रवृत्तियों और नैतिक संकट के इस दौर में आवश्यकता इस बात की है कि हम केवल महावीर का स्मरण न करें, बल्कि उनके आदर्शों को जीवन में उतारने का प्रयास करें। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर के क्रोध, लोभ, अहंकार और हिंसा पर विजय प्राप्त करने का संकल्प ले, तो समाज में स्वतः ही शांति, सद्भाव और नैतिकता का वातावरण निर्मित हो सकता है। इसलिए महावीर जयंती का संदेश स्पष्ट है- अपने भीतर के महावीर को जगाइए। अपने विचारों को उदात्त बनाइए, अपने आचरण को पवित्र कीजिए और जीवन को मानवीय मूल्यों से आलोकित कीजिए। यही भगवान महावीर के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी और यही समाज तथा राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला भी।

– डॉ. सुनील जैन 'संचय' ललितपुर
सह सम्पादक

साल भर रोगों से सुरक्षा देती है नीम की गोली

आयुर्वेद में नीम को केवल एक वृक्ष नहीं, बल्कि एक 'चलता-फिरता चिकित्सालय' माना गया है। आधुनिक विज्ञान जहाँ कहता है। 'Prevention is better than cure', वहीं हमारे ऋषियों ने सदियों पहले नीम के माध्यम से स्वास्थ्य रक्षा का मार्ग प्रशस्त कर दिया था।

1. नीम के विभिन्न नाम और परिचय
वैज्ञानिक नामः Azadirachta indica
आयुर्वेदिक नामः निम्ब, पिचुमर्द, तिक्तक, अरिष्ट, पारिभद्रक, हिंनिर्मास।
विशेषताः यह भारत में सर्वत्र पाया जाने वाला सदाबहार, औषधीय और पर्यावरण रक्षक वृक्ष है।

2. शास्त्रोक्त महत्व (श्लोक एवं अर्थ):
'शतायुर्वज्र देहाय सर्वसम्पत्कराय च।
सर्वानिष्ट विनाशाय निम्बकं दलभक्षणम।।'
अर्थः सौ वर्षों का लंबा जीवन (शतायु), वज्र जैसा मजबूत शरीर और सभी रोगों (अनिष्ट) के विनाश के लिए नीम की पत्तियों का सेवन अनिवार्य है।

'निम्बःस्यात् कटुकस्तितः
शीतोऽल्पोऽग्निदः।
कफपित्तास्त्रहृत्पाण्डु - कुष्ठ
मेहव्रणापहः।।'

(भाव प्रकाश निघण्टु) अर्थः नीम कड़वा, शीतल और पाचक होता है। यह कफ, पित्त, रक्त विकार, रक्ताल्पता (पाण्डु), कुष्ठरोग, मधुमेह और घावों को समूल नष्ट करता है।

3. प्रमुख औषधीय लाभः
त्वचा रोगः सूजनरोधी और जीवाणुरोधी गुणों के कारण मुँहासे, एक्जिमा और सोरायसिस में रामबाण।
रक्त शोधकः यह शरीर से विषाक्त पदार्थों को निकालकर रक्त को शुद्ध करता है।
रोग प्रतिरोधक क्षमताः शरीर की इम्युनिटी बढ़ाकर संक्रमण से सुरक्षा प्रदान करता है।
विविध उपयोगः दाँतों व मसूड़ों की सूजन, पेट के कीड़े (उदरकृमि), मधुमेह, अल्सर और मलेरिया रोधी गुणों से भरपूर।

4. विशेष स्वास्थ्य अभियानः 'नीम सुरक्षा गोली' - वैद्य पीठ द्वारा चैत्र नवरात्रि के प्रथम दिन से मात्र 15 दिनों के लिए इस विशेष गोली के सेवन का परामर्श दिया जाता है, जो पूरे एक वर्ष के लिए 'हेल्थ इंश्योरेंस' की तरह कार्य करती है।

घटक द्रव्य (सामग्री): नीम की कोमल ताम्र वर्ण पत्तियांः 10 ग्राम, काली मिर्चः 10 ग्राम, लाल हो चुकी हरी मिर्च (बीज रहित): 10 ग्राम

निर्माण एवं सेवन विधिः सभी सामग्रियों को धोकर साफ करें। मिर्च के बीज हटा दें और काली मिर्च का महीन चूर्ण बना लें। अब तीनों को एक साथ घोटकर महीन चटनी बना लें। थोड़ा सूखने पर मटर के समान छोटी गोलियां बनाकर सुखा लें।

सेवनः चैत्र नवरात्रि के प्रथम दिन से लगातार 15 दिन तक, प्रतिदिन सुबह खाली पेट जल के साथ एक गोली लें।

5. एक जागरूक संदेश - आज विश्व भारतीय आयुर्वेद के ज्ञान को पेटेंट कराने की होड़ में है। हमें अपने ऋषियों द्वारा विरासत में दिए गए इस ज्ञान के प्रति सचेत और गौरवान्वित होना चाहिए।

'आयुर्वेद अपनाएं, स्वास्थ्य बनाएं।'
- वैद्य राधेश्याम श्रीवास्तव

राष्ट्रीय खंडेलवाल दिगम्बर जैन संगठन के निःशुल्क व्हाट्सऐप बायोडाटा परिचय ग्रुप ने तीन वर्ष पूर्ण किए

इंदौर। राष्ट्रीय खंडेलवाल दिगम्बर जैन संगठन द्वारा संचालित निःशुल्क व्हाट्सऐप बायोडाटा परिचय ग्रुप ने सफलता पूर्वक तीन वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। इस पहल के माध्यम से खंडेलवाल सरावगी दिगम्बर जैन समाज के परिवारों को आपस में परिचय का एक सरल और उपयोगी माध्यम प्राप्त हुआ है। जानकारी के अनुसार वर्तमान में इसके विभिन्न ग्रुपों में 5000 से अधिक परिवार जुड़े हुए हैं और देश के 25 से अधिक शहरों से समाज के सेवाभावी लोग संयोजक के रूप में सहयोग कर रहे हैं। इस व्यवस्था के माध्यम से देश के अलग-अलग स्थानों पर निवास करने वाले परिवार अपने बेटे-बेटियों के बायोडाटा साझा कर सकते हैं तथा घर बैठे समाज के अन्य परिवारों के बायोडाटा अपने मोबाइल पर देख सकते हैं। इस व्यवस्था की विशेषता यह है कि इसमें किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता और परिवारों को किसी प्रकार की प्रतीक्षा या अलग-अलग स्थानों पर संपर्क करने की आवश्यकता नहीं रहती। अभिभावक अपने बच्चों का बायोडाटा नीचे दिए गए किसी भी संयोजक के मोबाइल नंबर पर भेज सकते हैं और संबंधित ग्रुप से जुड़कर नियमित रूप से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

संयोजकों में अनिता गंगवाल (पुणे), श्रीमती सुनीता काला (दिल्ली), बीना पदम सेठी जैन (सूरत), नेहा सरगम जैन (इंदौर), शमा अजमेरा (पुणे), नीरज-प्रीति मोदी (इंदौर), मुकेश विनायका (नीमच), महेंद्र पाटनी (हरदा), रतन पाटनी (अहमदाबाद), मनीष छाबड़ा (अहमदाबाद), आचार्य डॉ. नीता पंकज जैन (जालना), मनोज बड़जात्या (नासिक), शैलेंद्र जैन पाटनी (लखनऊ), श्रीमती शशि टोंग्या (भोपाल), श्रीमती वंदना बड़जात्या तथा सुनील कुमार जैन (अलवर) समाज की इस सेवा में सक्रिय रूप से सहयोग कर रहे हैं। इसके साथ ही 32 से 35 वर्ष आयु वर्ग के अविवाहित युवक-युवतियों तथा तलाकशुदा, विधवा-विधुर के लिए विशेष बायोडाटा ग्रुप भी संचालित किए जा रहे हैं। इसके लिए बायोडाटा भेजते समय ''विशेष बायोडाटा ग्रुप'' लिखकर भेजने का अनुरोध किया गया है। इस पहल के संस्थापक संदीप-शीतल पहाड़िया ने समाज के परिवारों से इस निःशुल्क व्यवस्था का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आग्रह किया है।

बायोडाटा भेजने या अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नंबर 7987455476 और 9827027045 पर संपर्क किया जा सकता है।

।। श्री पार्श्वनाथाय नमः।।

पेन्टर मधुसूदन एण्ड कम्पनी
(जैन कला विशेषज्ञ)
कुमावत कॉलोनी, बिहारी पोल, नया शहर किशनगढ़ (अजमेर) राज.
मो. 9828333966, 9461509807,
फोनः 01463-245195
www.jainartsblogspot.com
मन्दिरों में कांच कार्य, कांच पर मीनाकारी कार्य, गोल्डन कांच का कार्य, मार्बल डेरियों पर स्वर्ण कार्य तथा सभी तरह के स्वर्णयुक्त चित्र बनवाने एवं समस्त प्रकार के कलात्मक कार्य हेतु सम्पर्क करें।

प्रसिद्ध समाजसेवी, देव, शास्त्र, गुरु के परम भक्त, परम श्रद्धेय स्व. श्री राजेंद्र कुमार जी लुहाड़िया पुत्र स्व. श्री रामबाबू जी लुहाड़िया दुर्गापुरा, श्रीजी नगर, जयपुर निवासी की
प्रथम पुण्यतिथि 18. 03. 2026 पर
शत-शत् नमन वंदन

स्वर्गवास 08.03.25

-: श्रृद्धावनत :-
श्रीमती रेखा लुहाड़िया-पत्नी (अध्यक्ष) महिला मंडल दुर्गापुरा, मनीष लुहाडिया-डॉ. अक्षिता लुहाड़िया (पुत्र-वधू), कुहू (पौत्री) तथा गजेंद्र कुमार जी (दामाद), खिली, सिनिग्धा (दोहितियां) सहित समस्त लुहाड़िया परिवार, प्लॉट नंबर-3, एकता पथ, श्रीजी नगर, दुर्गापुरा जयपुर मो. 9530383358, 9828017959

अच्छे नेतृत्व का पतन: दोष किसका–व्यक्ति, समाज या व्यवस्था का?

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

भूमिका: एक बेचैन करने वाला प्रश्न - यह भूमिका केवल एक प्रश्न नहीं, बल्कि हमारे समय की सबसे गहरी सामाजिक पीड़ा का उद्घोष है। आज नेतृत्व की परिभाषा ही बदलती जा रही है। जहाँ कभी नेतृत्व का अर्थ था-सेवा, त्याग, उत्तरदायित्व और नैतिक साहस, आज वही नेतृत्व सत्ता, प्रभाव, वर्चस्व और निजी लाभ का पर्याय बनता जा रहा है। इसी परिवर्तन के कारण ईमानदार, निस्वार्थ और साफछवि वाले लोग नेतृत्व से दूर दिखाई देते हैं।

सबसे पहला कारण है-मूल्य और व्यवस्था का टकराव। अच्छे लोग सिद्धांतों के साथ जीते हैं, जबकि आज की नेतृत्व-व्यवस्था समझौतों पर टिकी है। झूठ, चापलूसी, जोड़-तोड़ और अवसरवाद उस सीढ़ी के पायदान बन गए हैं, जिस पर चढ़कर सत्ता तक पहुँचा जाता है। नैतिक व्यक्ति को यह रास्ता अस्वीकार्य लगता है, इसलिए वह स्वयं को इस दौड़ से अलग कर लेता है।

दूसरा बड़ा कारण है-संघर्ष और अपमान का भय। ईमानदार व्यक्ति जानता है कि यदि वह नेतृत्व में आएगा, तो उसे अकेले खड़ा होना पड़ेगा। उसे अपनों की नाराजगी, विरोधियों की साजिश और व्यवस्था की बेरुखी झेलनी होगी। सच बोलने की कीमत आज बहुत भारी हो चुकी है, और हर व्यक्ति उसमें स्वयं को झोंकने का साहस नहीं जुटा पाता।

तीसरा कारण है-चुप रहने वाले अच्छे लोग। समाज में अच्छे लोग कम नहीं हैं, पर वे मुखर नहीं हैं। वे सोचते हैं-"हमारे बिना भी व्यवस्था चल रही है" या "एक व्यक्ति क्या बदल लेगा?" यही मौन धीरे-धीरे बुराइयों को ताकत देता है। जब अच्छे लोग पीछे हटते हैं, तब नेतृत्व का स्थान स्वाभाविक रूप से वे लोग ले लेते हैं, जिनके पास नैतिक बल नहीं, बल्कि सत्ता की भूख होती है।

चौथा कारण है-समाज की दोहरी अपेक्षा। समाज ईमानदार नेतृत्व चाहता तो है, पर उसकी कीमत चुकाने को तैयार नहीं होता। वह सच्चे नेता से चमत्कार की उम्मीद करता है, पर उसके साथ खड़ा नहीं होता। उसे आदर्श चाहिए, पर सुविधाओं की कीमत पर। परिणामस्वरूप ईमानदार व्यक्ति हतोत्साहित होकर स्वयं को सुरक्षित दूरी पर रख लेता है। इसका परिणाम समाज को दीर्घकाल में चुकाना पड़ता है। जब नेतृत्व चरित्रहीन हाथों में चला जाता है, तब संस्थाएँ खोखली हो जाती हैं, विश्वास टूटता है, और पीढ़ियाँ दिशाहीन हो जाती हैं। तब हम शिकायत करते हैं राजनीति गंदी है, संस्थाएँ भ्रष्ट हैं, समाज टूट रहा है पर यह भूल जाते हैं कि अच्छे लोगों का पीछे हटना भी इस पतन का एक कारण है। अंततः यह प्रश्न केवल "वे आगे क्यों नहीं आते?" का नहीं है, बल्कि "हमने उनके लिए स्थान क्यों नहीं बनाया?" का भी है। जब तक समाज ईमानदारी को शक्ति नहीं देगा, त्याग को सम्मान नहीं देगा और सत्य के साथ खड़े होने का साहस नहीं करेगा तब तक नेतृत्व में अच्छे लोगों की कमी बनी रहेगी। यह समय आत्ममंथन का है, क्योंकि नेतृत्व वही मिलता है, जिसे समाज स्वयं स्वीकार करता है।

1. सत्ता का बदलता स्वरूप: सेवा से नियंत्रण तक - कभी नेतृत्व समाज की सबसे पवित्र जिम्मेदारी माना जाता था। प्रधान, अध्यक्ष या नेता होना सम्मान नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व होता था। नेतृत्व का अर्थ था सबसे आगे चलकर सबसे पीछे खड़े व्यक्ति की चिंता करना, अपने अधिकारों से अधिक अपने कर्तव्यों को समझना और स्वयं को समाज का सेवक मानना। उस समय सत्ता साधन नहीं, सेवा का माध्यम थी। पर समय के साथ नेतृत्व का स्वरूप पूरी तरह बदल गया। आज नेतृत्व सेवा से अधिक नियंत्रण का प्रतीक बन चुका है। प्रधान, अध्यक्ष, सचिव या नेता जैसे पद अब केवल नाम नहीं रहे, बल्कि शक्ति के केंद्र बन गए हैं। इन पदों के साथ निर्णय लेने की ताकत, धन के उपयोग पर अधिकार, अनुशंसा की शक्ति, ठेके, नियुक्तियाँ और सामाजिक प्रभाव जुड़ गया है। जहाँ शक्ति आती है, वहाँ स्वार्थ स्वतः प्रवेश कर लेता है। साफ छवि वाला, नैतिक व्यक्ति स्वभाव से सत्ता-लोलुप नहीं होता। उसका आत्मबल पद से नहीं, सिद्धांतों से जुड़ा होता है। वह दबाव की राजनीति, गुटबाजी, सौदेबाजी और षड्यंत्रों से दूर रहना चाहता है। ऐसे व्यक्ति को आज की सत्ता-संरचना "कमजोर" या "अयोग्य" मान लेती है, क्योंकि वह नियंत्रण की भाषा नहीं समझता, बल्कि विवेक और सदाचार की भाषा बोलता है। आज नेतृत्व के लिए सबसे बड़ी योग्यता सेवा नहीं, बल्कि नियंत्रण क्षमता बन गई है किसे दबाना है, किसे साधना है और किसे लाभ देकर चुप कराना है। ऐसे माहौल में ईमानदार व्यक्ति न तो स्वयं को फिट पाता है, न समाज उसे स्वीकार करता है। यही कारण है कि सत्ता का उद्देश्य जैसे ही सेवा से हटकर नियंत्रण बनता है, वैसे ही ईमानदारी अपने-आप हाशिए पर चली जाती है। "जहाँ सत्ता का उद्देश्य सेवा न होकर नियंत्रण बन जाए, वहाँ ईमानदारी स्वतः ही अयोग्य घोषित कर दी जाती है।"

2. धन और बाहुबल: चुनाव नहीं, निवेश बन गया है नेतृत्व - आज किसी भी संस्था, समाज या संगठन की चुनावी प्रक्रिया को देखें, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि नेतृत्व अब योग्यता की नहीं, निवेश की प्रतियोगिता बन गया है। बैनर, वाहन, बड़े-बड़े पोस्टर, महंगे भोज, प्रचार सामग्री, सोशल मीडिया अभियान, ये सब अब नेतृत्व के अनिवार्य हथियार बन चुके हैं। इसके साथ-साथ उपकार और भय की राजनीति भी खुलकर खेली जाती है। जो व्यक्ति सबसे अधिक पैसा खर्च करता है, वही सबसे मजबूत उम्मीदवार माना जाता है। पैसा अब विचारों को दबा देता है और प्रचार सच्चाई से ज्यादा प्रभावी हो जाता है। इस वातावरण में ईमानदार व्यक्ति स्वाभाविक रूप से पिछड़ जाता है, क्योंकि वह धन को साधन मानता है, हथियार नहीं। वह न पैसा बहाता है, न किसी को डराता है, न लालच देता है। ईमानदार व्यक्ति सोचता है कि उसकी साख, उसका अनुभव और उसका चरित्र पर्याप्त होगा। पर आज का तंत्र चरित्र नहीं, खर्च देखता है। परिणाम स्वरूप नेतृत्व वही पाता है, जो सबसे अधिक निवेश करता है, न कि वह जो सबसे अधिक योग्य होता है। यह व्यवस्था धीरे-धीरे भ्रष्टाचार को जन्म देती है, क्योंकि जो पैसा लगाकर पद पर आता है, वह उस पैसे की वसूली को अपना अधिकार समझने लगता है।

यह स्थिति समाज के लिए अत्यंत घातक है। नेतृत्व जब सेवा नहीं, बल्कि निवेश की वापसी का माध्यम बन जाए तो नैतिकता का पतन निश्चित है। तब ईमानदार व्यक्ति या तो पीछे हट जाता है या हताश होकर स्वयं को अलग कर लेता है।

"जब चुनाव योग्यता से नहीं, जेब से लड़ा जाए, तो चरित्र स्वाभाविक रूप से हार जाता है।"

3. चरित्र नहीं, चतुराई की पूजा - आज समाज में एक खतरनाक मानसिक परिवर्तन देखने को मिलता है। अब चरित्र की नहीं, चतुराई की पूजा होने लगी है। जो नियम तोड़कर आगे बढ़ता है, जो झूठ बोलकर काम निकाल लेता है, जो हर परिस्थिति में रंग बदल लेता है-उसे "स्मार्ट" कहा जाता है। इसके विपरीत, जो नियमों का पालन करता है, सत्य के साथ खड़ा रहता है, उसे भोला, अव्यावहारिक या पिछड़ा मान लिया जाता है। यह सोच समाज को भीतर से खोखला कर रही है। ईमानदार व्यक्ति दीर्घकालीन सोचता है। वह जानता है कि गलत रास्ता तात्कालिक लाभ दे सकता है, पर अंततः विनाश ही लाता है। लेकिन समाज को त्वरित परिणाम चाहिए। आज फायदा, अभी सफलता। ऐसे में चालाकी तेज दौड़ती हुई दिखाई देती है और ईमानदारी धीमी। नेतृत्व की दौड़ में यही सबसे बड़ा भ्रम है। लोग भूल जाते हैं कि दौड़ नहीं, दिशा महत्वपूर्ण है। चतुराई क्षणिक चमक देती है, जबकि चरित्र स्थायी विश्वास बनाता है। जब समाज स्वयं चालाक लोगों को पुरस्कार देता है, तब ईमानदार व्यक्ति स्वाभाविक रूप से पीछे रह जाता है।

"ईमानदारी धीरे चलती है और चालाकी दौड़ती हुई दिखाई देती है-पर मंजिल हमेशा ईमानदारी की ही होती है।"

4. अच्छे लोगों की चुप्पी: सबसे बड़ा कारण - इन सभी कारणों के बीच सबसे गंभीर और निर्णायक कारण है, अच्छे लोगों की चुप्पी। समाज में योग्य, शिक्षित, अनुभवी और नैतिक लोगों की कमी नहीं है, पर उनमें से अधिकांश नेतृत्व की जिम्मेदारी लेने से बचते हैं। वे कहते हैं-"मुझे झंझट नहीं चाहिए", "मुझे बदनामी नहीं चाहिए", "मुझे विवादों में नहीं पड़ना।" यह सोच मानवीय है, पर इसके परिणाम विनाशकारी हैं। जब अच्छे लोग पीछे हटते हैं, तब बुरे लोगों के लिए रास्ता खुला हो जाता है। सत्ता कभी खाली नहीं रहती, यदि योग्य लोग आगे नहीं आते, तो अयोग्य स्वयं आगे आ जाते हैं।

अच्छे लोगों की चुप्पी बुराई को सबसे बड़ा संरक्षण देती है। इतिहास गवाह है कि समाज का पतन अत्याचारी लोगों से कम और मौन दर्शकों से अधिक हुआ है। आज आवश्यकता है कि अच्छे लोग असुविधा स्वीकार करें, जोखिम उठाएँ और नेतृत्व की जिम्मेदारी लें।

"दुनिया बुरे लोगों से नहीं बिगड़ती, बल्कि अच्छे लोगों की चुप्पी से बिगड़ती है।"- एलबर्ट आइंस्टीन

5. गलत लोगों का संगठित होना: ईमानदारी की सबसे बड़ी चुनौती - नेतृत्व के पतन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारण है-गलत लोगों का संगठित होना। जो लोग गलत तरीकों से सत्ता में आते हैं, वे अकेले नहीं चलते। वे एक-दूसरे का संरक्षण करते हैं, एक-दूसरे की गलतियों पर परदा डालते हैं और संकट की घड़ी में एक ढाल बनकर खड़े हो जाते हैं। उनके लिए विचारधारा या नैतिकता महत्वपूर्ण नहीं होती, महत्वपूर्ण होता है-सत्ता का बचाव। ऐसे लोग जानते हैं कि यदि एक गिरा, तो कई गिरेंगे। इसलिए वे एक-दूसरे को बचाने के लिए झूठ को सच और सच को झूठ साबित करने से भी नहीं हिचकते। यह संगठित असत्य, ईमानदारी के लिए सबसे बड़ा खतरा बन जाता है। दूसरी ओर ईमानदार व्यक्ति स्वभाव से अकेला होता है। वह गुटबाजी से दूर रहता है, क्योंकि उसे विश्वास होता है कि सत्य अपने बल पर खड़ा रह सकता है। पर व्यवहारिक दुनिया में यही उसकी सबसे बड़ी कमजोरी बन जाती है। जब निर्णयों के समय संख्या देखी जाती है, तब संगठित गलत लोग भारी पड़ जाते हैं और अकेला सत्य दबा दिया जाता है। समाज अक्सर चरित्र नहीं, भीड़ देखता है। परिणाम स्वरूप ईमानदार व्यक्ति को समर्थन कम मिलता है, वह हतोत्साहित होता है और धीरे-धीरे नेतृत्व से स्वयं को अलग कर लेता है। यह स्थिति समाज के लिए अत्यंत घातक है, क्योंकि जब गलत लोग संगठित होते हैं और सही लोग बिखरे रहते हैं, तब नेतृत्व का पतन अवश्यंभावी हो जाता है।

"असत्य को संगठन चाहिए, सत्य अकेला भी पर्याप्त होता है-पर समाज अक्सर संख्या से प्रभावित हो जाता है।"

6. समाज की बदलती प्राथमिकताएँ: विवेक से सुविधा तक - नेतृत्व के संकट का एक गहरा कारण समाज की बदलती प्राथमिकताएँ भी हैं। आज मतदाता या समाज अक्सर समर्थन देता है-जाति के आधार पर, रिश्तेदारी के आधार पर, पुराने उपकारों के कारण, डर या दबाव में, या फिर तात्कालिक लाभ के लिए। चरित्र, योग्यता और दूरदृष्टि जैसे मूल्य धीरे-धीरे हाशिए पर चले गए हैं। समाज अब यह नहीं पूछता कि "यह व्यक्ति कितना ईमानदार है?", बल्कि यह देखता है कि "यह हमारे काम आएगा या नहीं?" नेतृत्व सेवा का माध्यम न रहकर लेन-देन का विषय बन गया है। ऐसे माहौल में ईमानदार व्यक्ति, जो किसी को डराता नहीं, लालच नहीं देता और झूठे वादे नहीं करता, स्वाभाविक रूप से पिछड़ जाता है। यह समाज की सामूहिक विफलता है। जब समाज स्वयं सुविधा को विवेक से ऊपर रखता है, तब वह अच्छे नेतृत्व का नैतिक अधिकार खो देता है। फिर वह शिकायत करता है कि नेता खराब हैं, व्यवस्था भ्रष्ट है, पर यह नहीं देखता कि ऐसे नेता उसी समाज की प्राथमिकताओं से जन्मे हैं।

"जिस समाज में वोट विवेक से नहीं, बल्कि सुविधा से दिया जाए-वहाँ नेतृत्व संकट में होना तय है।"

7. चरित्र हनन का भय: ईमानदारी पर सबसे क्रूर प्रहार - आज की राजनीति और सामाजिक नेतृत्व में चरित्र हनन सबसे सस्ता और प्रभावी हथियार बन चुका है। साफ छवि वाला व्यक्ति यह भली-भाँति जानता है कि जैसे ही वह नेतृत्व में आएगा, उस पर झूठे आरोप लगाए जाएंगे, सोशल मीडिया पर ट्रायल चलेगा, उसके परिवार को निशाना बनाया जाएगा और उसके निजी जीवन में दखल दिया जाएगा।

यह भय केवल व्यक्तिगत नहीं, पारिवारिक होता है। ईमानदार व्यक्ति सोचता है- "मेरे निर्णयों की सजा मेरे बच्चों या जीवन साथी को क्यों भुगतनी पड़े?" यही डर उसे पीछे हटने पर मजबूर कर देता है। दूसरी ओर, जिनके पास छुपाने को बहुत कुछ होता है, वे चरित्र हनन से डरते नहीं, क्योंकि वे उसी की भाषा समझते हैं।

"आज की राजनीति में सबसे सस्ता हथियार है-चरित्र हनन।"

इतिहास से उदाहरण - चरित्र की जीत, सत्ता की नहीं - महात्मा गांधी सत्ता के नहीं, सत्य के उपासक थे। उन्हें भी अपमान, आलोचना और चरित्र हनन का सामना करना पड़ा, पर उन्होंने सत्य का मार्ग नहीं छोड़ा। लाल बहादुर शास्त्री सादगी और ईमानदारी के प्रतीक थे। उनके पास न प्रचार था, न चतुराई, फिर भी वे इतिहास में अमर हैं। डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम राजनीति के कारण नहीं, चरित्र के कारण स्वीकार किए गए।

"नेतृत्व पद से नहीं, चरित्र से जन्म लेता है।"- ए. पी. जे. अब्दुल कलाम जैन दर्शन की दृष्टि से - सत्ता नहीं, संयम श्रेष्ठ - दिगंबर जैन दर्शन स्पष्ट कहता है-सत्ता नहीं, संयम श्रेष्ठ है। "अप्पा सो परमप्पा"-आत्मा की शुद्धता ही सर्वोच्च है। जब समाज संयम की जगह संग्रह और चरित्र की जगह प्रदर्शन को चुनता है, तब नेतृत्व पतन की ओर जाता है। जैन दर्शन हमें सिखाता है कि सच्चा नेतृत्व वही है, जो पहले स्वयं को जीत ले।

निष्कर्ष: समाधान कहाँ है? - यह मान लेना एक बड़ी भूल होगी कि आज समाज में साफछवि, ईमानदार और चरित्रवान लोग समाप्त हो गए हैं। सच्चाई इसके ठीक उलट है-ऐसे लोग आज भी हमारे बीच मौजूद हैं, परंतु वे हाशिये पर हैं। समस्या उनकी कमी की नहीं, बल्कि समाज की उस मानसिकता की है जो चतुराई, चालाकी और जोड़-तोड़ को योग्यता समझ बैठी है। जब तक समाज स्वयं यह तय नहीं करेगा कि उसे किस प्रकार का नेतृत्व चाहिए, तब तक समाधान अधूरा ही रहेगा।

समाधान की पहली शर्त है- चरित्र को प्राथमिकता देना। समाज ने वर्षों से धन, प्रभाव और भाषण-कला को नेतृत्व की कसौटी बना लिया है, जबकि ईमानदारी, निस्वार्थता और नैतिक साहस को कमजोरी मान लिया गया है। जब तक यह दृष्टि नहीं बदलेगी, तब तक साफछवि वाले लोग पीछे ही रहेंगे।

दूसरी आवश्यकता है- अच्छे लोगों की चुप्पी तोड़ना। आज अनेक सज्जन लोग केवल इस डर से आगे नहीं आते कि बदनामी होगी, आरोप लगेंगे, चरित्र पर प्रश्न उठेंगे। परंतु यदि सज्जन लोग पीछे हटते रहेंगे, तो रिक्त स्थान स्वतः ही अवसरवादियों से भर जाएगा। इतिहास गवाह है अन्याय की सबसे बड़ी ताकत, सज्जनों की चुप्पी रही है।

तीसरा और अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है- मतदाता का विवेक। जब वोट जाति, धन, संबंध या तात्कालिक लाभ के आधार पर दिया जाता है, तब ईमानदारी हार जाती है। जागरूक और नैतिक मतदाता ही साफनेतृत्व की नींव रख सकता है।

साथ ही, संस्थाओं में पारदर्शिता अनिवार्य है। जब नियम स्पष्ट हों, लेखा-जोखा खुला हो और निर्णय प्रक्रिया निष्पक्ष हो, तब चरित्रवान लोग आगे आने का साहस करते हैं। अंततः, समाज को बदनामी के भय से ऊपर उठना होगा। यदि सत्य बोलने और सही व्यक्ति का समर्थन करने में डर बना रहेगा, तो बदलाव केवल शब्दों तक सीमित रह जाएगा। वास्तव में, जिस दिन समाज यह तय कर लेगा कि उसे चालाक नहीं, चरित्रवान नेता चाहिए, उसी दिन ईमानदार लोग स्वयं आगे आएँगे और नेतृत्व का स्वरूप अपने आप बदल जाएगा।

अंतिम कोट - "जब समाज यह तय कर लेगा कि हमें चालाक नहीं, चरित्रवान नेता चाहिये तब ईमानदार लोग स्वयं आगे आएँगे।"

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान दिगम्बर जैन संतों के पावन चरणों में नमन वंदन अभिनंदन। महावीर जयन्ती की हार्दिक शुभकामनाएं

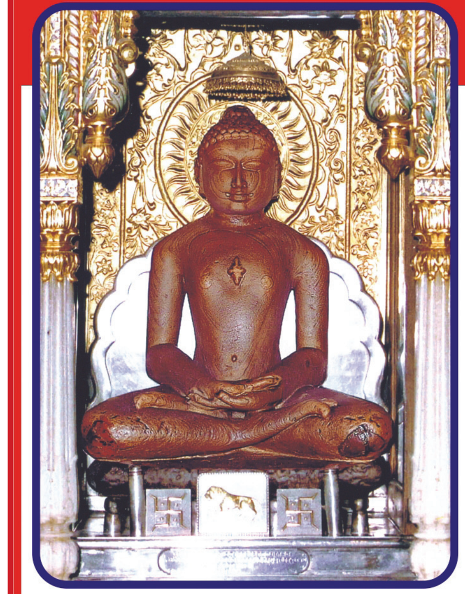

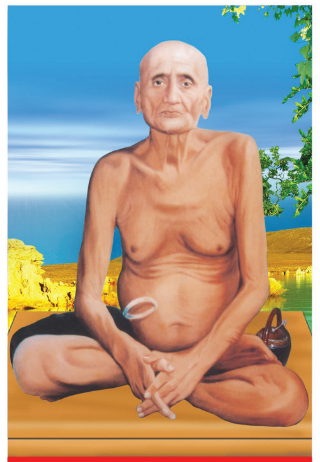
प.पू. चारित्र चक्रवर्ती आचार्य 108 श्री शान्तिसागरजी महाराज

प.पू. तपस्वी सम्राट आचार्य 108 श्री सन्मतिसागर जी महाराज

प.पू. षष्ट्म पट्टाचार्य 108 श्री अभिनंदनसागर जी महाराज

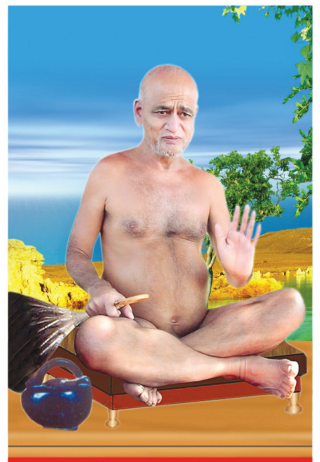
प.पू. संत शिरोमणि आचार्य 108 श्री विद्यासागर जी महाराज

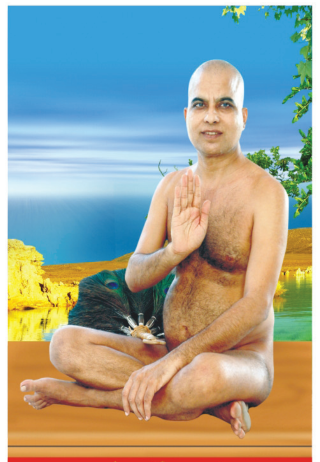
प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज

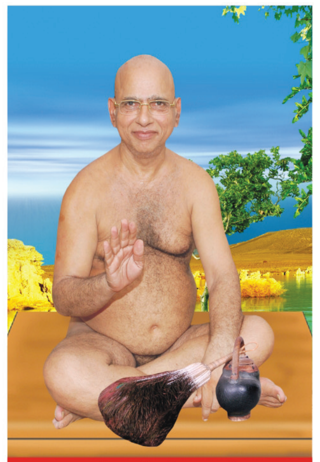
प.पू. आचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज

प.पू. गणधराचार्य 108 श्री कुन्थुसागर जी महाराज

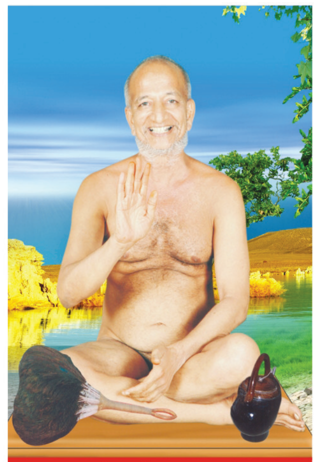
प.पू. आचार्य 108 श्री पुष्पदन्तसागर जी महाराज

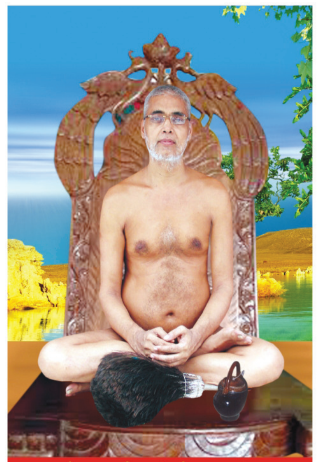
प.पू. वर्तमान पट्टाचार्य 108 श्री अनेकान्तसागर जी महाराज

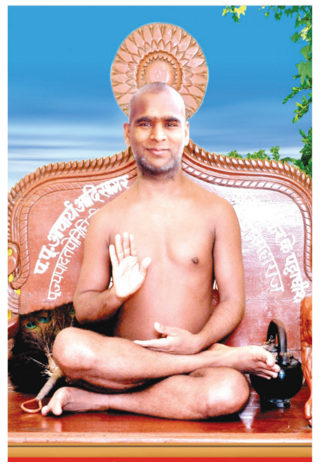
प.पू. आचार्य 108 श्री सुनीलसागर जी महाराज

परम पूज्य भारत गौरव
आचार्य श्री पुलकसागर जी महाराज

प.पू. आचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी महाराज

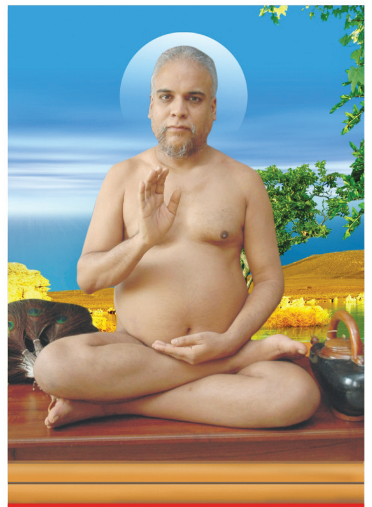
प.पू. आचार्य 108 श्री देवनन्दी जी महाराज

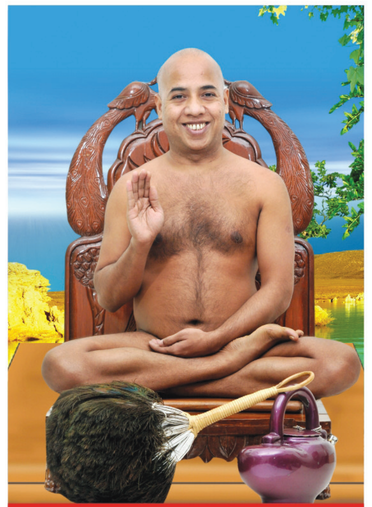
प.पू. आचार्य 108 श्री गुप्तिनन्दी जी महाराज

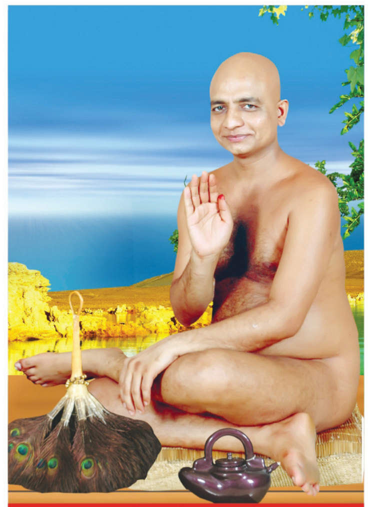
प.पू. आचार्य 108 श्री प्रसन्नसागर जी महाराज

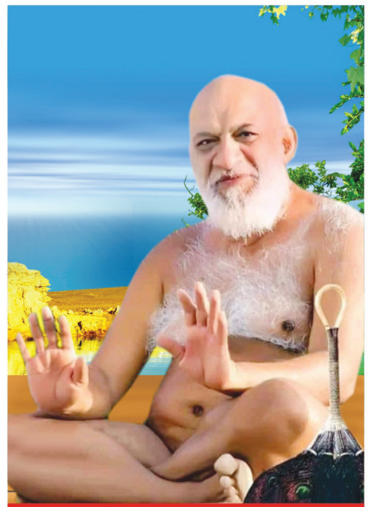
प.पू. मुनि पुंगव 108 श्री सुधासागर जी महाराज

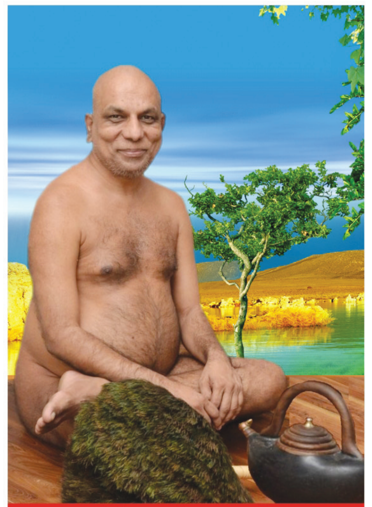
प.पू. मुनि पुंगव 108 श्री प्रमाणसागर जी महाराज

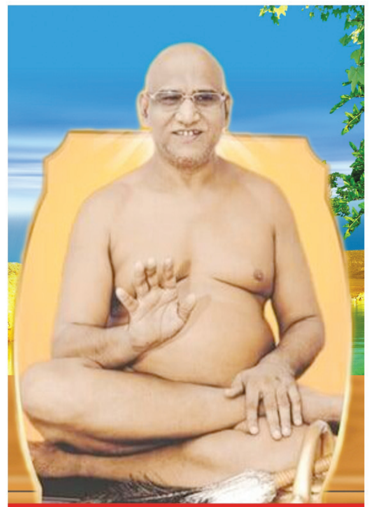
प.पू. मुनि पुंगव 108 श्री पुण्यसागर जी महाराज

प.पू. मुनि 108 श्री आदित्यसागर जी महाराज

नमन वंदन

प.पू. गणिनी आर्यिका 105 ज्ञानमती माताजी

प.पू. गणिनी आर्यिका 105 विशुद्धमति माताजी

प.पू. गणिनी आर्यिका 105 सुप्रकाशमति माताजी

प.पू. गणिनी आर्यिका 105 पूर्णमति माताजी

प.पू. गणिनी आर्यिका 105 विन्ध्यश्री माताजी

प.पू. गणिनी आर्यिका 105 सुभूषणमति माताजी

प.पू. गणिनी आर्यिका 105 चन्दनामति माताजी

प.पू. गणिनी आर्यिका 105 स्वस्तिभुषण माताजी

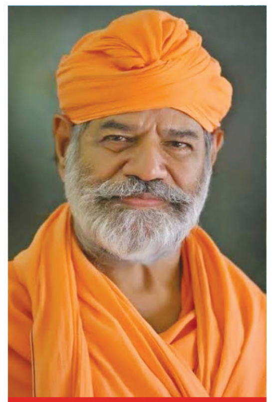
स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी जी

स्वस्ति श्री रवीन्द्र कीर्ति स्वामी जी

स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी जी

पं. मधुकान्त जोशी
(व्यवस्थापक)

मेवाड़ केटर्स

म.नं. 21, सखवाल नगर (रंगकारखाना) राम मंदिर, रतलाम (म.प्र.)
मो. 9981888980, 9425355761, 07412-235232
Best Food । Super Vision । Catering Service

मंदिर, पंचकल्याणक
प्रतिष्ठा महोत्सव
तथा अन्य मांगलिक उत्सवों पर
शुद्ध सात्विक भोजन बनाने की
सम्पूर्ण व्यवस्था

श्री भगवान महावीर स्वामी के
जन्मकल्याणक महोत्सव
(महावीर जयन्ती)
की
हार्दिक शुभकामनाएं

श्री नितिन भैयाजी, सीपुर

श्रद्धेय स्वामी देवेन्द्र भैयाजी

विज्ञापन प्रयास कर्ता : राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी राष्ट्र गौरव पारस जैन "पार्श्वमणि" पत्रकार ब्यूरो चीफ जिनवाणी टी वी चैनल कोटा (राज.) मोबाइल नंबर 9414764960

अणु परमाणु से नहीं अणु व्रत के धारण करने से विश्व में शांति सम्भव

पारस जैन 'पार्श्वमणि', कोटा, संवाददाता

भारत वसुंधरा पर समय-समय पर अनेकानेक महापुरुषों, ऋषि, मुनियों, तपस्वियों राम, कृष्ण, महावीर, गौतम बुद्ध जैसी दिव्यत्माओं ने जन्म लेकर संपूर्ण मानव समाज व सृष्टि को 'मानव से महामानव' 'नर से नारायण' 'तीतर से तीर्थंकर' बनने के मार्ग को दिखलाया है। भगवान महावीर स्वामी का जन्म कुंडग्राम में हुआ था, जो वर्तमान में बिहार के वैशाली जिले में स्थित है। उनका जन्म 599 ईसा पूर्व में राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला के घर हुआ था। कुंडग्राम को जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्मभूमि माना जाता है। महावीर स्वामी का जन्म एक क्षत्रिय परिवार में हुआ था और उनका मूल नाम वर्धमान था। आज संपूर्ण विश्व बारूद के ढेर पर बैठा हुआ है। अमेरिका, इजरायल, ईराक, ईरान, यूक्रेन, यमन, सीरिया इत्यादि देशों में युद्ध चल रहा है। अभी तक लाखों बेगुनाह लोग इस युद्ध में अपनी जान गँवा चुके है। भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांत आज के समय में भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उनके समय में थे। कौन कहता है कि भगवान महावीर के सिद्धांत आउट ऑफ डेट हो गए उनके सिद्धांत आउट ऑफ डेट नहीं वरन आज भी अप टू डेट है। उनके मुख्य सिद्धांतों में अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय और ब्रह्मचर्य शामिल हैं। ये सिद्धांत न केवल व्यक्तिगत जीवन को बेहतर बनाने में मदद करते हैं, बल्कि देश समाज संस्कृति और पर्यावरण को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। जीवन को जीवंत करने में सहायक है।

अहिंसा: आज के समय में जब हिंसा और असहिष्णुता बढ़ रही है, चारों ओर युद्ध, भय, अराजकता, वैमनस्यता दिखाई दे रही है ऐसे समय में महावीर की अहिंसा की बात बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। यह सिद्धांत न केवल शारीरिक हिंसा को रोकता है, बल्कि मानसिक और वाचनिक हिंसा भी रोकता है नियंत्रित करता है।

सत्य: वर्तमान समय में जब झूठ, कपट, चोरी, मायाचारी व्यभिचार और धोखाधड़ी आम हो गई है रिश्ते नाते सब तार तार हो रहे है। ऐसे विषम विपरीत समय मे सत्य का पालन करना बहुत जरूरी है। यह सिद्धांत व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर विश्वास और सम्मान बढ़ाता है। कहते भी है सत्य की सदैव जय होती है वो कभी पराजित नहीं हो सकता। हमारे राष्ट्रीय ध्वज में भी लिखा हुआ है 'सत्यमेव जयते'।

अपरिग्रह: आज के उपभोक्तावादी विलासिता भरे समाज में अपरिग्रह का सिद्धांत हमें आवश्यकताओं को सीमित रखने और पर्यावरण की रक्षा करने की प्रेरणा देता है। कोरोना कॉल ने हमें सादगी एवं सीमित साधनों में रहना सीखा दिया था।

अनेकांतवाद: यह सिद्धांत हमें विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने और सहिष्णुता को बढ़ावा देने की शिक्षा देता है, जो आज के समय में बहुत जरूरी है। अनेकांत और स्यादवाद इन सिद्धांतों के द्वारा विश्व की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। इन सिद्धांतों को अपनाकर हम एक बेहतर समाज और भविष्य बना सकते है।

ब्रह्मचर्य: भगवान महावीर स्वामी की शिक्षाएं जैन धर्म का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। उनके अनुसार, ब्रह्मचर्य का अर्थ है इंसान का अपने मन, वचन, और काय को नियंत्रित करना और कामवासना से दूर रहना। समस्त विकारो से रहित हो आत्मा में रमण करना। चेतन अवस्था को प्राप्त करना। ब्रह्मचर्य आत्म-संयम और आत्म-शुद्धि के लिए आवश्यक है। भगवान महावीर स्वामी के अनुसार ब्रह्मचर्य का पालन करने से इंसान अपने भीतर की शक्तियों को जागृत कर सकता है और आत्म-ज्ञान प्राप्त कर सकता है। महावीर शब्द ही अपने आप में सार्थक है। 'महावीर का 'म' कहता है मन का संयम बना रहे महावीर का 'ह' कहता है। हाथ दया से सना रहे महावीर का 'वी' कहता है धीर वीर गंभीर बने महावीर का 'र' कहता है राम, कृष्ण, महावीर बने। अंत में इतना ही कहूंगा जैसा कि सुप्रसिद्ध संगीतकार रविंद्र जी जैन एक गीत में बोला 'हिंसा पीड़ित राष्ट्र राह महावीर की तकता है वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है'।

भ. महावीर स्वामी की 2625वीं जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें

हिंसा पीड़ित राष्ट्र राह महावीर की तकता है।
वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है।।

संपूर्ण भारतवर्ष के संतों के पावन चरणों में नमन वंदन अभिनंदन

-: शुभाकांक्षी :-

दीपक-मीना
प्रधान बालाजी मंदिर के सामने
मुकाम पोस्ट धामनोद,
जिला धार (म. प्र.) 454552
मो. 7999710004, 7023518108

विज्ञापन प्रेषक -पारस जैन संवाददाता, कोटा (राज.)

भ. महावीर स्वामी की 2625वीं जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें

-: शुभाकांक्षी :-

श्री श्री 1008 श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन
अतिशय क्षेत्र ग्राम निमोला जिला टोंक (राज.)

बाबूलाल जी जैन

अध्यक्ष-बाबूलाल जैन रानोली वाले टोंक 9414226524
महामंत्री- भागचंद जैन धुवावाले 9413004649
मंत्री- पारस कुमार जैन उम वाले 9414903168
सहमंत्री-संजय कुमार जैन लाम्बा वाले 9950476011
कोषाध्यक्ष - अशोक कुमार जैन निमोला वाले 6350082416

विज्ञापन प्रेषक -पारस जैन संवाददाता, कोटा (राज.)

भ. महावीर स्वामी की 2625वीं जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें

मनोहारी श्री चन्द्रप्रभु भगवान

भारत गौरव स्वस्ति धाम तीर्थ प्रणेती परम विदुषी लेखिका गणिनी आ. 105 स्वस्तिभूषण माताजी

-: शुभाकांक्षी :-

श्री दिगम्बर जैन चंन्द्राचल स्वाति तीर्थ
अतिशय क्षेत्र प्यावडी पीपलू टोंक (राज.)

अध्यक्ष-रतनलाल जैन 9571268503, महामंत्री- श्रेयांस अग्रवाल 8124967610
कोषाध्यक्ष- अरूण जैन 7792969333
एवं मंदिर समिति के सदस्यगण

विशेषता:- दिसम्बर 2019 से इस मंदिर में लगभग प्रत्येक पूर्णिमा को केसर एवं चांदी का सिक्का दिखाई देता है। सैकड़ों श्रद्धालुगण दर्शन कर चुके हैं। अपनी चंचला लक्ष्मी का दान देकर पुण्यार्जन करें .
बैंक अकाउण्ट 12880100019646 IFSC : BARB0PIPLOO

विज्ञापन प्रेषक -पारस जैन संवाददाता, कोटा (राज.)

भ. महावीर स्वामी की 2625वीं जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें

श्री दिगम्बर जैन मंदिर, विज्ञान नगर, कोटा 324005 राज.

राजमल जैन पाटोदी अध्यक्ष मो. 9414176474	पारसमल जैन सी. ए. कार्याध्यक्ष मो. 9352621024	रितेश सेठी कार्याध्यक्ष मो. 9413353130
बाबूलाल जैन कोषाध्यक्ष मो. 9413470348	पी. के. हरसोरा मंत्री मो. 9413404140	अनिल जैन ठोरा महामंत्री मो. 9352609001
देवेंद्र जैन गंगवाल सहकोषाध्यक्ष मो. 9251041334	एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य	

विज्ञापन प्रेषक - पारस जैन संवाददाता, कोटा (राज.)

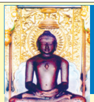

भ. महावीर स्वामी के 2625वें जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें

-: शुभाकांक्षी :-

अजय जैन-श्रीमती अर्चना जैन,
कुमारी प्रियल,
सक्षम हरसौरा,
भानपुरा पता-अजय गारमेन्टस भानपुरा,
जिला-मंदसौर (म. प्र.) 458775
मो. 9424076950

विज्ञापन प्रेषक -पारस जैन संवाददाता, कोटा (राज.)

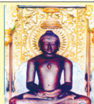

भ. महावीर स्वामी के 2625वें जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें

-: शुभाकांक्षी :-

Reg. No.: IMPPA-14359
रंगशाला
Production House
संगीत, नृत्य, नात्य अकादमी
ऑफिस : 27/2, नार्थ राज मोहल्ला, इंदौर
मो. 94240-90608, 8962830838
email-rangshalaacademy@yahoo.in
Face book-rangshaala production

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, वेदी प्रतिष्ठा, रथ यात्रा आदि आयोजनों में जैन सांस्कृतिक कार्यक्रमों, जैन आर्केस्ट्रा (भजन संध्या) महानाट्य संध्या आदि के लिये संपर्क करें..

निदेशक साधना मादावत
ग्लोबल युवा महासभा द्वारा भारत की सशक्त महिला शक्ति सम्मान, लंदन बुक ऑफवर्ल्ड रिकॉर्ड द्वारा सम्मानित, मुम्बई जैन समाज द्वारा नारी रत्न सम्मान, मैं भारत हूं फाउंडेशन मुम्बई द्वारा राजस्थान कोहिनुर अवॉर्ड से सम्मानित व अनेकानेक उपाधियों से अलंकृत
मो. 9424090608 8962830838

विज्ञापन प्रेषक -पारस जैन संवाददाता, कोटा (राज.)

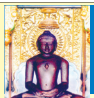

भ. महावीर स्वामी के 2625वें जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें

-: शुभाकांक्षी :-

इंजी. श्री पी. सी. जैन

श्रीमती अभिलाषा जैन

(इंजी.) प्रियक जैन- (इंजी.)
चीना जैन चि. पराग जैन
निवास - 6/12
तीन बत्ती, मेन रोड,
बसन्त बिहार, कोटा
0744-2400400, 09462733133

विज्ञापन प्रेषक -पारस जैन संवाददाता, कोटा (राज.)

भ. महावीर स्वामी के 2625वें जन्म कल्याणक पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें

-: शुभाकांक्षी :-

श्री 1008 वासुपूज्य दिगम्बर जैन मंदिर
विकास समिति (रजि.)

खसरा नं. 45, प्लॉट नं. 28, कृष्णा नगर, रंगबाड़ी रोड़, कोटा (राज.) 324005

अध्यक्ष संजय जैन बाकलीवाल मो. 9414188225	महामंत्री निर्मल जैन (कोटिया) मो. 9610415155	कोषाध्यक्ष राजेन्द्र जैन (ठोरा) मो. 9829093660

समस्त कार्यकारिणी के सदस्यगण
महिला मंडल, युवा मंडल एवं जैन समाज, कृष्णा नगर, कोटा

विज्ञापन प्रेषक -पारस जैन संवाददाता, कोटा (राज.)

भ. महावीर स्वामी के 2625वें जन्म कल्याणक पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें

-: शुभाकांक्षी :-

अशोक पहाड़िया अध्यक्ष	रविन्द्र लुहाड़िया कार्याध्यक्ष	हेमन्त पाटनी वरिष्ठ उपाध्यक्ष
प्रकाश सामरिया महामंत्री		उपेन्द्र जैन कोषाध्यक्ष

व समस्त कार्यकारिणी एवं सदस्य
श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर समिति, तलवण्डी, कोटा

विज्ञापन प्रेषक - पारस जैन संवाददाता, कोटा (राज.)

भ. महावीर स्वामी की 2625वीं जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें

हिंसा पीड़ित राष्ट्र राह महावीर की तकता है।
वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है।।

संपूर्ण भारतवर्ष के संतों के पावन चरणों में नमन वंदन अभिनंदन

: शुभाकांक्षी :

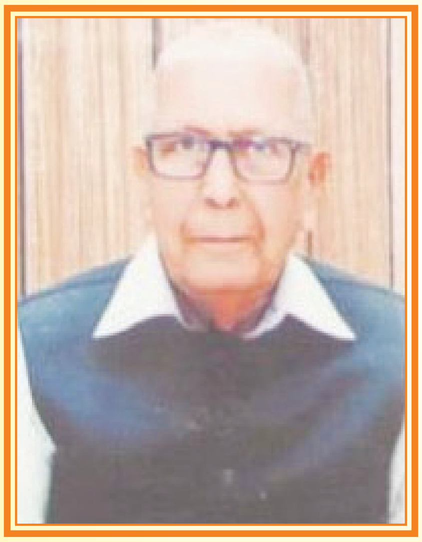

भागचन्द टोंग्या-स्व. श्रीमती पतासी देवी जैन, देवेन्द्र कुमार टोंग्या-श्रीमती उर्मिला देवी टोंग्या, अमन कुमार टोंग्या-श्रीमती किरण देवी टोंग्या चि. शोभित टोंग्या

1-फ-44, विज्ञान नगर, कोटा (राज.) 324005
मो. 9352631666, 9214078916

सत्य अहिंसा विश्व शांति के अग्रदूत, जन-जन के आराध्य वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी की चैत्र शुक्ला तेरस दिनांक 31 मार्च, 2026 को 2625वीं

जन्म जयंती पर हार्दिक शुभकामनाऐं

: शुभाकांक्षी :

ज्ञानचंद जी-श्रीमती विजया जी जैन
संजय-तृप्ति जी जैन
आकांक्षा जी, अदिति जी, आराध्या जैन
ए-24, आर. के. पुरम, कोटा (राज.) 324010
मो. 9413650012

भ. महावीर स्वामी की 2625वीं जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें

हिंसा पीड़ित राष्ट्र राह महावीर की तकता है।
वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है।।

संपूर्ण भारतवर्ष के संतों के पावन चरणों में नमन वंदन अभिनंदन

: शुभाकांक्षी :

बी. एल. जैन - श्रीमती निर्मला जैन
मो. 9314336626

TRADE CENTRE
288, Shopping Centre, Kota-324007 (Raj.)
Phone : 0744-2361159, 2362871
Fax : 2362652
Email- tradecen@datainfosys.net

भ. महावीर स्वामी की 2625वीं जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें

हिंसा पीड़ित राष्ट्र राह महावीर की तकता है।
वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है।।

संपूर्ण भारतवर्ष के संतों के पावन चरणों में नमन वंदन अभिनंदन

-: शुभाकांक्षी :-

श्री सकल दिगम्बर जैन समाज कोटा-324006 (राज.)

पूर्व अध्यक्ष	परम संरक्षक	अध्यक्ष
राजमल पाटोदी अजय बाकलीवाल	विमलचंद जैन (नान्ता) विनोद कुमार जैन टोरडी प्रकाश जैन ठौरा	प्रकाश जैन बज मो. 9829038108
कोषाध्यक्ष	**महामंत्री**	
जितेन्द्र जैन हरसोरा मो. 9414189438	पद्म जैन बड़ला मो. 9829036695	एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्यगण

विशाल रक्तदान शिविर का हुआ आयोजन

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

राजस्थान जैन सभा शाखा दूदू के तत्वाधान भगवान महावीर स्वामी के 2625वें जन्म कल्याणक महोत्सव के उपलक्ष्य में 14 मार्च शनिवार को दूदू में स्वैच्छिक विशाल रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। यह शिविर श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के पास स्थित जैन भवन (धर्मशाला) में आयोजित हुआ। शिविर में कुल 103 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। उक्त शिविर में महिलाओं की भागीदारी विशेष सराहनीय रही और कई महिलाओं ने स्वेच्छा से रक्तदान कर समाज में प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में राजस्थान जैन सभा शाखा दूदू के अध्यक्ष पदम कुमार जैन अजमेरा, मंत्री पद्मचंद काला, संयोजक पंकज बोहरा व आशीष डोषी, रोटरी क्लब दूदू के अध्यक्ष डॉ. गौरीशंकर शर्मा, कोषाध्यक्ष विजय जैन तथा सचिव मनोज शर्मा मौजूद रहे, साथ ही दिगम्बर जैन ब्लॉक समिति दूदू के अध्यक्ष विमल कुमार छाबड़ा, सकल दिगम्बर जैन समाज दूदू के अध्यक्ष त्रिलोक चंद जैन, ज्ञानमती महिला मंडल दूदू की अध्यक्ष मनोरमा बोहरा सहित कई सामाजिक कार्यकर्ता और गणमान्य नागरिक उपस्थित थे, उक्त शिविर का आयोजन राजस्थान जैन सभा की प्रेरणा से राजस्थान जैन सभा शाखा दूदू और रोटरी क्लब दूदू के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

अद्भुत प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी श्री भागचन्द्र जी टोंग्या

कोटा। देव शास्त्र गुरू के परम भक्त उदारमना व्यवहार कुशल, शांत व्यक्तिव के धनी श्रीमान भागचन्द्र जी टोंग्या ने लगभग 12 साल तक अतिशय तीर्थक्षेत्र पद्मपुरा के अध्यक्ष पद पर अपनी सेवाएं निस्वार्थ भाव से समर्पित कीं। आपने अपने अध्यक्ष काल में चार बार श्रीमती सोनिया गांधी जी को बुलाया। वर्तमान समय में आप अपने मकान 1 फ 44 विज्ञान नगर कोटा आवास पर रह रहे हैं। आप वर्तमान समय में निवाई जैन समाज के अध्यक्ष अतिशय तीर्थक्षेत्र साखना के शिरोमणि संरक्षक हैं। आपकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती पतासी देवी टोंग्या जो कि आस्थावान, धर्मनिष्ठ सद संस्कारों से युक्त थी। आपके सुयोग्य समाजसेवी सुपुत्र देवेन्द्र कुमार टोंग्या पुत्रवधु श्रीमती उर्मिला देवी टोंग्या सुपौत्र अमन कुमार टोंग्या पौत्रवधु श्रीमती किरण देवी टोंग्या प्रपौत चि. शोमित जैन टोंग्या हैं। **-पारस जैन 'पार्श्वमणि', संवाददाता, कोटा**

भ. महावीर स्वामी की 2625वीं जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें

महावीर का म कहता है मन का संयम रहे बना, महावीर का ह कहता है हाथ दया से रहे सना, महावीर का वी कहता है वीतराग इंसान गंभीर बने, और महावीर का र कहता है रामकृष्ण महावीर बने

-: शुभाकांक्षी :-

पारस जैन 'पार्श्वमणि'

श्रीमती सारिका जैन

कुमारी खुशबू जैन

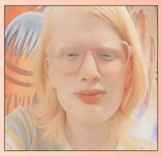

कुमारी गरिमा जैन

मकान नं. ए 145, आर. के. पुरम त्रिकाल बीबीसी जैन मंदिर के पास कोटा (राज.)-324010, मो. 9414764980

भ. महावीर स्वामी की 2625वीं जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें

-: शुभाकांक्षी :-

अशोक जैन-मंजू जैन पहाड़िया, अनिरूद्ध-सपना पहाड़िया, अश्विन-पल्लवी पहाड़िया, आर्जव, अव्यान, अनाया एवं अद्वैत पहाड़िया, तलवंडी, कोटा, राजस्थान
मो. 9414189971, 9829335566

विज्ञापन प्रेषक -पारस जैन संवाददाता, कोटा (राज.)

भ. महावीर स्वामी की 2625वीं जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें

-: शुभाकांक्षी :-

पद्म कुमार जैन शांता जैन,
मनीष कुमार जैन रागनी जैन,
प्रिश जैन, जशवी जैन
राम जी की गली भेरू जी कूवा के सामने, मुकाम पोस्ट - झालरापाटन जिला झालावाड़, (राजस्थान) 326023,
मो. 9887782656

विज्ञापन प्रेषक -पारस जैन संवाददाता, कोटा (राज.)

भ. महावीर स्वामी की 2625वीं जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें

-: शुभाकांक्षी :-

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन

SHAH Group of Companies
Grow with Green

Best Compliments from....
SHAH GROUP OF COMPANIES
Corp.Office : 101, Mohsin Manzil, 252, Shopping Centre, KOTA-7 (Raj.)
Mob.: 9829037583, 9352537583, 7727010446, 8766685401, 9314457583
Email : info@shahagrogreen.com, Jaindharmc@yahoo.co.in, Website : www.shahagrogreen.com

विज्ञापन प्रेषक -पारस जैन संवाददाता, कोटा (राज.)

भ. महावीर स्वामी 2625वीं जन्म जयंती पर हार्दिक शुभकामनायें

-: शुभाकांक्षी :-

महावीर प्रसाद जैन-राजकुमारी अजमेरा
विकास-ऋतु अजमेरा, वरूण-वर्षा अजमेरा वत्सल, सजल, आर्जव, अनय एवं समस्त अजमेरा परिवार
कोटा (राज.) 324005 मो. 9352638979, 8209092377
आप अतिशय तीर्थ चांदखेड़ी कमेटी में महामंत्री पद पर विगत 18 वर्षों से सेवाएं दे चुके है। वर्तमान समय में आप कार्यकारी महामंत्री के पद पर हैं। आप महासमिति के कोटा संभाग के पूर्व अध्यक्ष पद पर रह चुके हैं।

विज्ञापन प्रेषक -पारस जैन संवाददाता, कोटा (राज.)

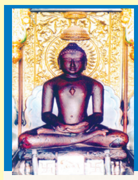

भ. महावीर स्वामी 2625वीं जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें

पुण्यार्जक

चि. विहान के जन्मदिन के उपलक्ष्य में...

ईश्वर-संतोष, गुमान-अलका, विपुल-प्रियंका विहान, विराज, अभिनन्दन, गुजंन-डॉली, दिव्या सोनी (राजमहल वाले) कोटा

विज्ञापन प्रेषक -पारस जैन संवाददाता, कोटा (राज.)

भ. महावीर स्वामी 2625वीं जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें

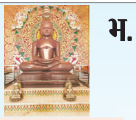

श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ भगवान सुथडा

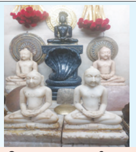

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान पराना

-: शुभाकांक्षी :-

महावीर प्रसाद जैन-श्रीमती मैना देवी जैन
अध्यक्ष-सुखोदय तीर्थ सुंथड़ा जिला टोंक
अध्यक्ष-दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप प्रज्ञा निवाई
मंत्री- जैन समाज निवाई
उपाध्यक्ष- जिला कांग्रेस कमेटी टोंक
पार्षद- नगर पालिका निवाई
विक्रम, प्रियंका ग्रंथ वीर जैन पराना वाले निवाई जिला टोंक (राज.) मो. 9414204216

विज्ञापन प्रेषक -पारस जैन संवाददाता, कोटा (राज.)

भ. महावीर स्वामी की 2625वीं जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी

-: शुभाकांक्षी :-

श्री कपूरचंद जैन
डॉ. सुमित्रा जैन
101 मंगलदीप अपार्टमेंट, 05 श्याम नगर, राज हॉस्पिटल के पास, जोधपुर (राज.) 342008
मो. 9828312654

विज्ञापन प्रेषक - पारस जैन, संवाददाता, कोटा (राज.)

श्री 1008 श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र सांखना, जिला-टोंक (राजस्थान)

भगवान महावीर स्वामी के 2625वें जन्म जयन्ति पर सभी देश वासियों को सम्पूर्ण कार्यकारिणी की ओर से बधाई एवं शुभकामना

卐 आचार्य इन्द्रनंदी जी महाराज समस्त ससंघ को त्रिकाल नमोस्तु 卐

अध्यक्ष
श्री प्रकाशचन्द जी सोनी सांखना
मो. 9414558485

मंत्री
प्यारचन्द जैन, छान
मो. 9829108025

कोषाध्यक्ष
मनीष जैन बज देवड़ावास
मो. 9929382623

यह क्षेत्र दिन दुगनी रात चौगनी तरक्की की ओर बढ़ रहा है और यह अध्यक्ष प्रकाश जी सोनी एवं कार्यकारिणी के प्रयास का फल है।
आयोजक: श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र सांखना (टोंक) राज.

विज्ञापन प्रेषक - पारस जैन संवाददाता, कोटा (राज.)

जैन धरोहर दिवस 27 अप्रैल पर द्वितीय जूम मीटिंग संपन्न

14 मार्च 2026 को श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा एवं निर्ग्रंथ सेंटर ऑफ आर्कियोलॉजी के संयुक्त तत्वावधान में सम्पूर्ण देश एवं शहरों में जैन धरोहर दिवस मनाये जाने हेतु केन्द्रीय पदाधिकारियों एवं पुरातत्व संयोजकों की आनलाइन जूम मीटिंग का आयोजन तीर्थ संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राजकुमार जी जैन सेठी की अध्यक्षता में किया गया। असर्वप्रथम मंगलाचरण तीर्थ संरक्षिणी महासभा की कार्यकारिणी सदस्य श्रीमती नवीना बड़जात्या, बंगलौर ने किया। दीप प्रज्ज्वलन तीर्थ संरक्षिणी महासभा के उपाध्यक्ष श्री अजित जैन झांझरी, नलबाड़ी ने किया। महामंत्री श्री राजकुमार जैन सेठी ने स्वागत भाषण देते हुये कहा कि हर वर्ष हम लोग 27 अप्रैल को स्व. निर्मल कुमार जी सेठी की पुण्य स्मृति में जैन धरोहर दिवस का पालन करते हैं। इस वर्ष ज्यादा से ज्यादा स्थानों पर जैन धरोहर दिवस मनाया जाये इसलिये आज की मीटिंग रखी गयी है। पिछले वर्ष 490 स्थानों पर जैन धरोहर दिवस का पालन किया गया था। इस वर्ष 600 स्थानों पर मनाये जाने का टारगेट रखा गया है । जिस प्रान्त में सबसे ज्यादा स्थानों पर जैन धरोहर दिवस मनाया जायेगा उसको पुरस्कृत किया जायेगा। इस बार महाराष्ट्र प्रान्त को पुरस्कृत किया जायेगा। तीर्थ संरक्षिणी महासभा के कार्याध्यक्ष श्री धर्मचंद जी जैन पहाड़िया जयपुर ने जिन-जिन स्थानों पर धरोहर दिवस का आयोजन किया जाये वहां पर संयोजक मनोनीत करने का सुझाव दिया जिससे कि आगामी वर्षों में जैन धरोहर दिवस का आयोजन अधिक से अधिक स्थानों पर हो सकेगा। उन्होंने राजस्थान में करीब 100 स्थानों पर जैन धरोहर दिवस मनाये जाने का आश्वासन दिया। श्री संजय दीवान, कार्याध्यक्ष, तीर्थ संरक्षिणी महासभा, सूरत ने रायगढ़ के मंदिर जीर्णोद्धार कार्य की जानकारी देते हुये कहा कि मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य पूरा हो चुका है। उन्होंने तीर्थ संरक्षिणी महासभा के परम शिरोमणि संरक्षक एवं स्व. श्री निर्मल कुमार जी सेठी के सुपुत्र श्री धर्मेन्द्र जैन का आभार प्रकट किया जिन्होंने वेदी निर्माण एवं अन्य कार्य में 11 लाख एवं 5-5 लाख रूपये का सहयोग प्रदान किया।

वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री टी. के. वैद, इंदौर ने मध्य प्रदेश में 100 स्थानों पर जैन धरोहर दिवस मनाये जाने का आश्वासन देते हुये मध्य प्रदेश के 53 जिलों में सभी जगह शीघ्र ही तीर्थ संरक्षिणी महासभा की नई इकाई गठन करने की बात कही। पुरातत्व संयोजक श्री ओम पाटोदी, इंदौर ने मध्य प्रदेश में जैन धरोहर दिवस के कार्यक्रम आयोजित किये जाने की विस्तृत जानकारी दी। डॉ. यतीश जैन, उपाध्यक्ष, तीर्थ संरक्षिणी महासभा ने कहा मानव सभ्यता की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहरें समाज की पहचान और उसकी ऐतिहासिक स्मृति का आधार होती है।

पुरातत्व संयोजक श्री अजित लोहाड़े ने वर्ष 2025 में जैन धरोहर दिवस के हुये आयोजनों के संदर्भ में जानकारी देते हुये इस वर्ष 211 स्थानों पर जैन धरोहर दिवस का पालने करने का आश्वासन दिया।

श्री विकास जैन, उपाध्यक्ष, तीर्थ संरक्षिणी महासभा ने जैन धरोहर दिवस के संदर्भ में 13 मार्च 2026 को प्रातः 8. 00 बजे हिन्दुस्तान क्लब कोलकाता में हुई मीटिंग एवं अपरान्ह 3.30 बजे प्रेस क्लब, रेड रोड, कोलकाता में हुई कान्फ्रेंस तथा 26 अप्रैल को कोलकाता में मुख्य आयोजन एवं 27 अप्रैल को पंचेतपहाड़ में होने वाले सेमिनार की विस्तृत रूप से जानकारी दी।

तीर्थ संरक्षिणी महासभा के उपाध्यक्ष श्री अभय शाह, लखनऊ ने जैन धरोहर दिवस के आयोजन की हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हुये लखनऊ के आशियाना जैन मंदिर में जैन धरोहर दिवस का आयोजन करने की जानकारी दी ।

पुरातत्व संयोजक श्री राजेश कुमार जैन हैदराबाद, श्री अतिवीर जैन, इंदौर, श्री प्रकाशचंद जैन बड़जात्या, पूणे, श्री मनीष जैन, उदयपुर, श्री महावीर मानिकचंद सेठी, औरंगाबाद, श्री शैलेश जैन गुवाहाटी, श्री किशोर जैन बोंगईगांव ने भी जैन धरोहर दिवस मनाये जाने की जानकारी दी। तीर्थ संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राजकुमार जी सेठी ने कहा कि जैन धरोहर दिवस के संदर्भ में तीसरी मीटिग 11 अप्रैल को होगी। उन्होंनें सभी पुरातत्व संयोजकों एवं पदाधिकारियों से निवेदन किया इस मींटिग में आप सभी लोग किन - किन स्थानों पर जैन धरोहर दिवस का पालन करेंगे उसकी लिस्ट बनाकर जानकारी देने का निवेदन किया। तीर्थ संरक्षिणी महासभा के संयुक्त महामंत्री श्री कमल कुमार जैन रांवका, लखनऊ ने कहा कि तीर्थ संरक्षिणी महासभा की स्थापना 28 वर्ष पूर्व श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने की थी जिसका उद्देश्य था प्राचीन धरोहर की सुरक्षा करना और जहां पर ज्यादा मूर्तियां मिली हैं वहां पर म्यूजियम की स्थापना करना। उन्होंने उत्तर प्रदेश में 5 स्थानों पर अपनी चंचला लक्ष्मी का उपयोग कर जैन गैलरी की स्थापना कर मूर्तियों को विनयपूर्वक विराजमान करवाया तथा तन-मन-धन से समर्पित होकर प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

भ. महावीर स्वामी की 2625वीं जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें
: शुभाकांक्षी :
मुनिपुंगव श्री सुधासागर बालिका छात्रावास
श्री दिगम्बर जैन पूण्योदय तीर्थक्षेत्र नसियां जी दादाबाड़ी, कोटा (राज.)
प्रवेश प्रारम्भ
वातानुकुलित AC, अटैच लैटबाथ, सिंगल एवं डबल रूम, कोचिंग तक आने-जाने की सुविधा, 24 घण्टे महिला सुरक्षा गार्ड, पूर्ण सुरक्षित परिसर में स्थित सात्विक भोजन IIT-JEE, NEET, SCHOOL, RPSC, UPSC, CA, Teaching Banking अन्य Govt,Job की तैयारी हेतु सिंगल महिला व बालिकाओं हेतु सिंगल एवं डबल AC रूम उपलब्ध हैं।
Laundry/Ro Water/CCTV कैमरा की 24 घण्टे सेवा उपलब्ध हैं
मो. 9829038906, 9799521154
अध्यक्ष
शिरोमणी संरक्षक
श्रीमती अर्चना जैन (रानी) दुगोरिया सर्राफ
परम संरक्षक
डॉ. संतोष जैन
निर्देशक
श्रीमती उषा जैन बाकलीवाल
सचिव
श्रीमती निशा जैन वेद
कोषाध्यक्ष
श्रीमती छाया जैन हरसोरा
एवं समस्त छात्रावास परिवार
विज्ञापन प्रेषक - पारस जैन, संवाददाता, कोटा (राज.)

भ. महावीर स्वामी की 2625वीं जन्म जयंती पर बधाई एवं मंगलमयी हार्दिक शुभकामनायें
हिंसा पीड़ित राष्ट्र राह महावीर की तकता है।
वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है।।
-: शुभाकांक्षी :-
देवाधिदेव श्री 1008
श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन त्रिकाल चौबीसी पुण्योदय अतिशय क्षेत्र, नसियां जी दादाबाड़ी, कोटा
अध्यक्ष
जम्बू जैन सर्राफ
मो. 9829038111
निदेशक
हुकम जैन 'काका'
मो. 9414184618
महामंत्री
महेन्द्र कासलीवाल
मो. 9829253683
कोषाध्यक्ष
मनीष जैन मोहीवाल
मो. 9414286020
समस्त कार्यकारिणी श्री नसियां जी क्षेत्रीय दिगम्बर जैन समाज समिति (रजि.), दादाबाड़ी, कोटा (राज.)
मो. 9413166664, 9413184122
विज्ञापन प्रेषक - पारस जैन, संवाददाता, कोटा (राज.)

अहिंसा का संदेश जग में फैलाया, सत्य और करुणा का मार्ग दिखाया।
भगवान महावीर के पावन विचार, बनें जीवन में सुख-शांति का आधार।।
देवाधिदेव 1008 श्री महावीर स्वामी
जयंती के इस शुभ अवसर पर आपको और आपके परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ।
सकल दिगम्बर जैन समाज समिति
(राजस्थान संस्था अधिनियम 1958 के अंतर्गत पंजीकृत)
महिला प्रकोष्ठ
अध्यक्ष
श्रीमती निशा जैन वेद मो. 9829338330
उप संयोजिका
श्रीमती चन्द्रा पाटोदी मो. 9414177823
श्रीमती मीनाक्षी कंजोलिया मो. 9352865165
श्रीमती अंजली जैन मो. 8078699310
श्रीमती अंजू कासलीवाल मो. 9950964572
एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य महिला प्रकोष्ठ
विज्ञापन प्रेषक - पारस जैन, संवाददाता, कोटा (राज.)

अनंतनाथ भगवान का ज्ञान एवं मोक्ष कल्याणक तथा अरहनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक दिवस मनाया

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

18 मार्च 2026। फागी कस्बे सहित परिक्षेत्र के चकवाडा, चोरू, नारेड़ा, मंडावरी, मेहंदवास, निमेडा, लसाडिया तथा लदाना सहित कस्बे के जिनालयों में जैन धर्म 14 वें तीर्थंकर अनंतनाथ भगवान का ज्ञान एवं मोक्ष कल्याणक महोत्सव तथा 18 वें तीर्थंकर अरहनाथ भगवान मोक्ष कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। कस्बे के मुनिसुव्रतनाथ जिनालय में प्रातः श्री जी का अभिषेक करने के बाद समाज की ओर से सामूहिक रूप से शांतिधारा कर अष्ट द्रव्यों से पूजा अर्चना कर जैन धर्म के 14 वें तीर्थंकर अनंतनाथ भगवान का ज्ञान एवं मोक्ष कल्याणक तथा 18 वें तीर्थंकर अरहनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक

महोत्सव का जयकारों के सामूहिक रूप से अर्घ्य एवं लाडू चढ़ाकर सुख समृद्धि और शांति की कामना की गई, कार्यक्रम में महिला मंडल की कमला कासलीवाल एवं आशा बजाज ने बताया कि अनंतनाथ भगवान जैन धर्म के 14 में तीर्थंकर थे, जो असीम ज्ञान, दर्शन और शक्ति के प्रतीक माने जाते हैं, उनका जन्म अयोध्या में राजा सिंह सेन और रानी सुयशा के घर हुआ था, वे सत्य, अहिंसा और आत्म अनुशासन के संदेश के लिए पूजनीय है, उन्होंने दीक्षा लेकर शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखर जी से मोक्ष प्राप्त किया था इसी कड़ी में महिला मंडल की सुशीला झंडा एवं अंजू टीबा ने अरहनाथ भगवान के बारे में बताया की अरहनाथ भगवान सातवें चक्रवर्ती थे, उन्होंने हस्तिनापुर में आम वृक्ष के नीचे हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली थी और चक्रपुर में प्रथम आहार ग्रहण किया था, उनके शासन देव का नाम शनमुख यश और शासन देवी का नाम धारिणी यक्षिणी था, उन्होंने कठिन तपस्या करके सम्मेद शिखर पर्वत से मोक्ष प्राप्त किया था। कार्यक्रम में समाज के वयोवृद्ध फूलचंद गिंदोढी, कपूरचंद नला, मोहनलाल झंडा, महावीर कठमाना, भागचंद जैन टीबा, कैलाश कासलीवाल, हरकचंद झंडा, हनुमान कलवाड़ा, रमेश बजाज, महेंद्र गोधा, महावीर बजाज, मुकेश गिन्दोढी, जीतू कासलीवाल, कमलेश चोधरी, सुशील कासलीवाल, आशु झंडा, राहुल टीबा, मनीष गोधा, राजाबाबू गोधा तथा संतरा झंडा, कमला सिंघल, प्रेम देवी पंसारी, पर्यूषणा झंडा, कमला कासलीवाल, हेमलता बजाज, शोभा झंडा, रेखा झंडा, गुणमाला झंडा, इलायची मोदी, आशा मोदी, रेखा हांडी गांव, ललिता सिंघल, अंजू टीबा, संतोष मांदी, आशा बजाज, मधु गिंदोढी, सुनिता गिंदोढी, सुशीला झंडा एवं रिया जैन सहित सभी श्रावक श्राविकाएं मौजूद थे।

राजस्थान में तीर्थंकर दिवस पर तकनीकी शिक्षा विभाग की अनूठी पहल

राज्यभर में होंगी प्रतियोगिताएं: प्रदेश के तकनीकी महाविद्यालय में भी गूंजेगा भगवान ऋषभदेव का दिव्य संदेश: युवा वर्ग को अहिंसा, सत्य और श्रमण संस्कृति से जोड़ने का प्रयास

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

18 मार्च। जैन धर्म के प्रवर्तक एवं प्रथम तीर्थंकर देवाधिदेव ऋषभदेव के जन्म एवं दीक्षा कल्याणक (ऋषभ नवमी) तीर्थंकर दिवस पर भगवान ऋषभदेव के जीवन पर आधारित विभिन्न प्रतियोगिता और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करने की तकनीकी शिक्षा विभाग ने अनूठी पहल की शुरुआत की है। भगवान ऋषभदेव ने लोक व्यवहार को चलाने के लिए तीन वर्णों की स्थापना की थी, इस सम्बन्ध में तकनीकी शिक्षा निदेशालय के निदेशक राजेश कुमार शर्मा ने राजकीय पॉलिटेक्निक महाविद्यालय और राजकीय महिला पॉलिटेक्निक महाविद्यालय तथा निजी पॉलिटेक्निक महाविद्यालय के प्रधानाचार्य, राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय के प्राचार्य को आदेश जारी किए है, इस निर्णय को जैन समुदाय और प्रदेश के सभी वर्गों ने सामाजिक सद्भाव और सांस्कृतिक संवाद की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया है। कार्यक्रम में तकनीकी महाविद्याओं में होने वाली प्रतियोगिताएं -

1. श्रमणों का प्रवचन 2. समूह चर्चा 3.स्वरचित कविता पाठ 4. एकल गायन 5. वाद-विवाद 6. व्याख्यान माला 7. नाटक 8. मूक अभिनय 9. चित्रकला 10. पोस्टर मेकिंग 11. रंगोली 12. निबन्ध लेखन 13. रचनात्मक लेखन 14. प्रदर्शनी प्रेरणा का संदेश।

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थान के पूर्व अध्यक्ष और राजस्थान समग्र जैन युवा परिषद् के संरक्षक जस्टिस नरेन्द्र कुमार जैन ने बताया ऐसे कार्यक्रमों से नवीन युवा वर्ग को देवाधिदेव भगवान ऋषभदेव के आदर्श जीवन और उनके कार्यों से प्रेरणा मिलेगी। जैन समुदाय एवं अल्पसंख्यक वर्ग के युवा वर्ग ने जताया राजस्थान सरकार का आभार, इस अवसर पर अल्पसंख्यक वर्ग जैन समुदाय एवं अल्पसंख्यक वर्ग के युवा वर्ग ने राजस्थान के यशस्वी मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेम चन्द बैरवा, मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास , अतिरिक्त मुख्य सचिव तकनीकी शिक्षा कुलदीप रांका, संयुक्त शासन सचिव महेन्द्र कुमार शर्मा, सहायक शासन सचिव हेमेन्द्र गोयल और मोहम्मद उसामा, तकनीकी शिक्षा के निदेशक राजेश कुमार शर्मा आदि का आभार प्रकट करते हुए उनका धन्यवाद ज्ञापित किया।

महावीर स्वामी जन्मोत्सव पर रक्तदान शिविर

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

15 मार्च। श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, एस एफएस राजावत फार्म, न्यू सांगानेर रोड, मानसरोवर में 15 मार्च को प्रातः 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक एक विशाल रक्तदान शिविर के साथ आम जनता के लिए ब्लड शुगर और डायबिटीज के साथ नेत्र चिकित्सा शिविर लगाया गया। कार्यक्रम में मंदिर समिति के अध्यक्ष कमलेश जैन एवं मंत्री सौभाग मल जैन ने बताया कि इस शिविर में श्रीमती रुचि सेठी एवं दंत चिकित्सक श्रीमती प्रमिला जैन द्वारा निशुल्क जांच की गई जिसमें कम से कम 160 लोगों ने इसमें फायदा उठाया। रक्तदान शिविर में लोगों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया, जिसमें करीब 60 लोगों ने रजिस्ट्रेशन करवाया उसमें 40 लोगों का ब्लड लिया गया। समिति के महामंत्री सौभागमल जैन ने बताया कि कैंप का प्रारंभ प्रातः 9:00 बजे भगवान आदिनाथ के चित्र के सामने समाज के युवा श्रेष्टि श्री कमलेश चंद-श्रीमती सुशीला जी कासलीवाल फगी वाले सुमेर नगर, दीप प्रज्वलन श्रीमान दिनेश जी श्रीमती संजू जी बनेठा परिवार द्वारा किया गया। कार्यक्रम में राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष सुभाष चंद्र जैन, महामंत्री मनीष वेद, श्री विनोद कोटखावदा, रक्तदान शिविर संयोजक श्री राजीव पाटनी तथा दुर्गापुरा से यश कुमार अजमेरा, मधुबन कॉलोनी से अनिल छाबड़ा, मंदिर समिति के अध्यक्ष कमलेश चंद जैन वरिष्ठ उपाध्यक्ष अशोक कोटलर, प्रचार मंत्री सुरेंद्रपाटनी, कोषाध्यक्ष संतोष अजमेरा, क्षेत्रीय संयोजक मुकेश कासलीवाल, जिनेश जैन स्थानीय संयोजक कुणाल काला, मनोज काला रवि जैन कासलीवाल, सी.ए. रोहित जैन, रजत जैन, संजीव सेठी, महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती उर्मिला पाटनी, मंत्री आशा जैन, युवा मंडल अध्यक्ष मनोज काला, मंत्री जिनेंद्र जैन उपस्थित रहे। रक्तदान करने वाले सभी महानुभावों को संस्था की तरफ से सर्टिफिकेट और जीवन रक्षा हेतु हेलमेट देकर सम्मानित किया गया।

जनकपुरी में आर्यिका अर्हम श्री माताजी संघ के पावन सानिध्य में मनाया दो तीर्थंकरों का मोक्ष कल्याणक

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर, 18.03.26 जनकपुरी। ज्योतिनगर जैन मंदिर में आर्यिकारत्न 105 अर्हम श्री माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में चैत्र कृष्णा अमावस्या बुधवार को जैन धर्म के 14 वें तीर्थंकर अनंतनाथ भगवान तथा 18 वें तीर्थंकर अरहनाथ भगवान का निर्वाणोत्सव निर्वाण काण्ड वाचन कर भक्ति भाव के साथ मोक्ष कल्याणक अर्घ बोलते हुए श्रद्धालुओं द्वारा निर्वाण लाडू समर्पित किए गए। कार्यक्रम में दोनों तीर्थंकरों का निर्वाण शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखर से हुआ था। कार्यक्रम में इससे पूर्व शांतिधारा, पूजन, 108 जाप्य आदि के बाद संघस्थ आर्यिका संस्कृत श्री माताजी ने देव व गुरु के दर्शन के बारे में समझाते हुए कहा कि इनके गुणों को ग्रहण करने के हमारे भाव होने चाहिए। इधर मोक्ष कल्याणक के सुअवसर पर आर्यिका अर्हम श्री माताजी ने बताया कि

विवेकपूर्ण कार्यों से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है, उन्होंने कहा कि जब तक राग व मोह जीवन में रहेगा तब तक मोक्ष का लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सकता है। आर्यिका माताजी के सानिध्य में मोक्ष कल्याणक की पूर्व संध्या चतुर्दशी पर भक्तामर दीप अर्चना का आयोजन हुआ जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की सहभागिता रही। मंदिर समिति के अध्यक्ष पदम बिलाला ने बताया कि कार्यक्रम बाद आर्यिका संघ ने सभी श्रद्धालुओं को मंगलमय आशीर्वाद प्रदान किया।

With best comlipments from
Ashok Anuradha Pahariya
Assam knitwear, Guwahati (Assam)
(Manufacturer of Sweater, T Shirts, Track Suit etc and deals in all kinds of school uniform)]
Mobile No. 8761015224
Sohani Imphal (Manipur)
(A store of salwar suit, night wears, saris, bed sheets, blankets etc)
Mob. 8732804313

समाज से विनम्र निवेदन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा की जा रही धार्मिक एवं सामाजिक कल्याण की योजनाओं में दान देकर सहयोग प्रदान कीजिये। संस्था को 12 I/80G (प्रमाण पत्र संख्या URN-AAHTS7154EF2025101) एवं CSR-1 (प्रमाण पत्र संख्या -SRN-N30616809) के तहत आयकर में छूट प्राप्त है।
संपर्क : मोबाइल/वाट्सअप - 9415008344, 9415108233, 7607921391, 7505102419

SHRI BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN MAHASABHA
ACCOUNT NO. - 2405000100033312
RTGS/IFSC/NEFT Code - PUNB0185600 PUNJAB NATIONAL BANK, RAJENDRA NAGAR, Lucknow Pin Code - 226004 (U.P.)

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

WITH BEST COMPLIMENTS FROM
Padam Chand Jain (Dhakra)
(Vice President-Shri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha)
Mahendra Kumar Jain (Dhakra)
(Working President- Shri Bharatvarshiya Digamber Jain (Teerth Sanrakshini) Mahasabha T. N. Branch
Pradeep Commercial Interprises
(Iron & Steel Merchants)
56, Sembudoss Street, 2nd Floor, P. B. No 8343, Chennai-600 001
Phone No. 25228522, 25220032 Off. 25206812, 25202601 Resi.
Mobile : P. C. Jain-9444918024 M.k.Jain-9444028522
ASSOCIATE :
Shanti Enterprises
Banglore 080-25266482, Mob. : 09448092260

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. गुरुजी मेरी तुला राशी है, मैं कौन सा रत्न धारण कर सकती हूं - बीना जैन, दिल्ली

उत्तर - बीना जी, आपकी कुंडली में आपकी तुला राशी होती है। आप कुंडली के अनुसार मूंगा रत्न धारण कर सकती है।

प्रश्न 2. मेरे बड़े बेटे का स्वास्थ्य लगातार गिरता चला जा रहा है। डाक्टर कोई बीमारी नहीं बता पा रहे हैं - हीरामल, बदायूं

उत्तर - श्री भक्तामर जी का 45 वां स्त्रोत रोजाना 45 बार पानी के सामने पढ़े तथा वह पानी पीने के लिये दें। लग्नेश रत्न माणिक्य रविवार को सोने में धारण करायें।

प्रश्न 3. हाथ में सूर्य रेखा कौन सी होती है? - अजित प्रसाद जैन सहारनपुर, (यू.पी.)

उत्तर - अनामिका ऊँगली के नीचे की रेखा सूर्य रेखा होती है।

प्रश्न 4. छोटे भाई की संगत अच्छी नहीं है, जिस कारण छोटे बड़ों की बेअदबी करने लगा है - विनोद जैन, जगदलपुर छत्तीसगढ़

उत्तर - राहु की दशा के कारण ऐसा है। श्री नेमीनाथ जी का चालीसा पढ़ने को कहें, साथ ही गोमेंद रत्न का लॉकेट धारण करायें।

गुरु जी से संपर्क सूत्र-
9990402062, 826755078

पांड्या परिवार की तरफ से भगवान महावीर के जन्म कल्याणक पर समस्त भारतवर्ष में विराजमान आचार्य संघों, आर्यिका संघों के पावन चरणों में शत-शत नमन, वंदन एवं सभी देशवासियों को भगवान महावीर के 2625 वें जन्म कल्याणक पर हार्दिक शुभकामनाएं

श्री उत्तम कुमारजी पांड्या-श्रीमती सरोज देवी पांड्या (खोरा बिसल वाले) बने जैन गजट के संरक्षक

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

प्रसिद्ध समाजसेवी, देव, शास्त्र गुरु के परम भक्त (खोरा बिसल वाले) मालवीय नगर जयपुर निवासी ने जैन समाज की 135 साल सबसे पुरानी पत्रिका जैन गजट का संरक्षक बनकर खुशी जाहिर की है, जैन गजट संवाददाता राजाबाबू गोधा फागी को जानकारी पर ज्ञात हुआ कि आपका जन्म समाजसेवी स्व. श्री कोजूलाल जी पांड्या-स्व. श्रीमति फूलां देवी पांड्या खोरा बिसल निवासी के यहां 15 अक्टूबर 1951को पुत्र रत्न के रूप में हुआ था तथा स्व. श्री घीसालाल जी (वकील)-स्व. श्रीमती फीणी देवी सीकर निवासी की लाडली सुपुत्री श्रीमती सरोज देवी के साथ 19.02.1973 को हर्षोल्लास पूर्वक आपकी शादी हुई थी, आप एवं आपका परिवार साधु सेवा एवं धर्मचर्या में हमेशा अग्रणी रहता है, आपके दो पुत्र लोकेश (डी फार्मा)- श्रीमती निधि जैन, तपेश (CS)- श्रीमती प्रीति जैन, (पुत्र-पुत्र वधू) तथा रिद्धि जैन एवं राज कटारिया (पोत्री दामाद), चिरायु जैन (सॉफ्ट इंजीनियर अमेरिका), डॉ. देवेश जैन एम. बी. बी. एस (जोधपुर) तथा रजत जैन एम. बी. ए सहित भरा पूरा परिवार है, सभी परिवारजन भी साधु सेवा एवं धर्मचर्या में अग्रणी रहकर धर्म की प्रभावना बढ़ाते हुए अक्षय पुण्य प्राप्त कर रहे हैं, आप मुनि सुधा सागर जी महाराज के अनन्य भक्त हैं, आप असहाय एवं गरीब लोगों के मसीहा हैं, समाज में कैसा भी, कोई भी धार्मिक कार्य हो आप हमेशा तन, मन, धन से निस्वार्थ सेवा भाव अथाह सहयोग देकर धर्म लाभ प्राप्त करते आ रहे हैं। आपने आपके जीवन काल में अनेक लोगों को धार्मिक यात्रा करवाकर अक्षय पुण्य करते हुए धर्म लाभ प्राप्त किया है। आपने अनेक मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाकर धर्म लाभ प्राप्त किया है, आपने श्री दिगम्बर जैन चंद्रप्रभु मंदिर मालवीय नगर, सेक्टर-10 जयपुर में मुनि सुधासागर जी महाराज के पावन सानिध्य में हुए पंच कल्याणक महामहोत्सव भगवान के माता-पिता बनकर धर्म लाभ प्राप्त किया है। आपके द्वारा आगरा रोड जयपुर में शंकर सेवा धाम के नाम से अनाथाश्रम चल रहा है, जिसमें सभी वर्गों को तन, मन, धन से निशुल्क सहायता उपलब्ध कराई जा रही है, आपके द्वारा अनेक गौशालाओं में योगदान दिया जा रहा है, आपके द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में कमजोर एवं असहाय वर्ग के लोगों को निशुल्क सहायता दी जा रही है, कोरोना काल की महामारी में आप एवं आपके परिजनों के द्वारा लाखों लोगों को दवाइयां, कपड़े, राशन उपलब्ध करवाकर उनका जीवन बचाकर नया जीवन दान देकर, अक्षय पुण्य अर्जित कर धर्म लाभ प्राप्त किया है, आप श्री दिगम्बर जैन संस्कृत कॉलेज सांगानेर के परम संरक्षक, श्रमण संस्कृति संस्थान छात्रावास सांगानेर के संरक्षक एवं उपाध्यक्ष का भी दायित्व संभाल रहे हैं, अभी हाल ही में आपकी काबिलियत को देखते हुए आपको वूमेन-फुटबॉल फेडरेशन ऑफ इंडिया एडवाइजर कमेटी का चेयरमैन नियुक्त किया गया है, आप अखिल भारतीय उपभोक्ता उत्थान संगठन राजस्थान स्टेट के अध्यक्ष भी हैं, आप कंज्यूमर कोन्फीड्रेसन ऑफ इंडिया (सी. सी. आई) राजस्थान स्टेट के महामंत्री भी हैं, गोधा ने बताया कि आप देश की सर्वोच्च धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी रहकर अपना दायित्व निभा रहे हैं, आपने जैन गजट का संरक्षक बनने की खुशी में जैन गजट को 5100/- रुपए की सहयोग राशि प्रदान कर धर्म लाभ प्राप्त किया है। जैन गजट परिवार आपके भविष्य की मंगलमय कामना करता है। हम वीर प्रभु से यही कामना करते हैं कि आप एवं आपका परिवार दीर्घायु, चिरायु एवं स्वस्थ रहे तथा दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करता रहे।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबाइल - 08290950000
प्रकाशचन्द्र जैन बड़जात्या
मोबाइल- 9840213132
राजेश बी. शाह
मोबाइल- 9076700000

महामंत्री
पवन जैन गोधा
मो. 9311198985

कोषाध्यक्ष
प्रकाश बोहरा
दिल्ली

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ०प्र०)
jaingazette2@gmail.com
dmahasabha@yahoo.com

सह सम्पादक (मानद)
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
डॉ. सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से कोरियर से मंगाने पर प्रतिवर्ष अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र. रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391, 7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल jaingazette2@gmail.com पर भेजें

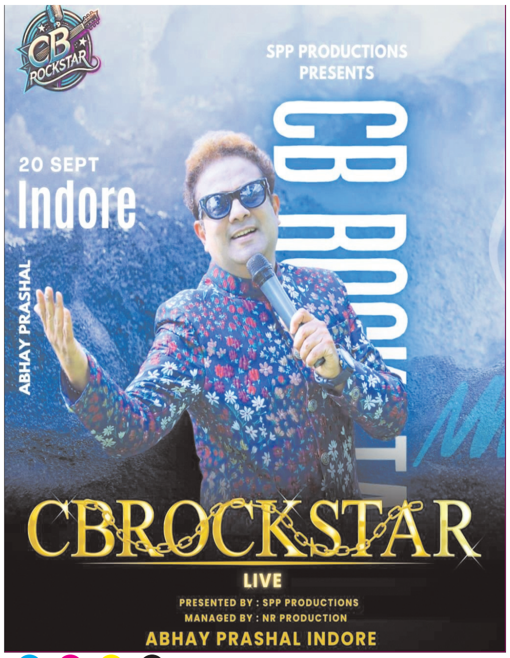

देह देह के अभाव को मिली है पुनः प्राप्ति के लिए नहीं

हमारी उपलब्धि परिणामों में होती है, संयोग में नहीं

परिणाम बिगाड़ने से भी परिणमन नहीं बदलता

सही दिशा की ओर बढ़ने वाले किसी की नहीं, अपने दिल की सुनते हैं

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगबर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एसप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर लोर मिल्स कपाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सपादक -सुधेश कुमार जैन

श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
लोगुज्जोयरा धम्म तित्थयरे जिणवरेय अरहंते।
कित्तण केवलिमवे य उत्तमबोहि मम दिसंतु॥

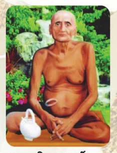
चरित्र चक्रवर्ती
आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज

स्मृति दिवस श्री निर्मलकुमार जैन सेठी

जैन धरोहर दिवस

स्व. निर्मल कुमार जैन सेठी
(8 जुलाई, 1938 – 27 अप्रैल, 2021)

मान्यवर
सादर जयजिनेन्द्र,
श्रावकरत्न, कर्मयोगी, देव, शास्त्र और गुरु के अनन्य उपासक, प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धारक श्री निर्मलकुमार जी जैन सेठी की पंचम पुण्यतिथि के अवसर पर सेठी ट्रस्ट और श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा की ओर 26 अप्रैल 2026 दिन रविवार को बंगाल की राजधानी कोलकाता में और 27 अप्रैल 2026 दिन सोमवार को पंचकोट (पंचेत पहाड) जिला पुरुलिया (पश्चिम बंगाल) मे उनके कार्यों के पुण्यस्मरण एवं विनयांजलि हेतु समारोह का आयोजन किया जा रहा है। उक्त पावन दिवस पर **'दर्शन एवं साहित्य'** तथा **'कला एवं पुरातत्व'** के क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान करने वाले दो विद्वानों को **'श्री निर्मलकुमार सेठी जी मेमोरियल पुरस्कार'** से सम्मानित किया जाएगा। आप सभी से सादर अनुरोध है कि इस पुण्यतिथि के अवसर पर उन्हें विनयांजलि देने हेतु सपरिवार पधारकर हमें कृतार्थ करें।

कार्यक्रम

प्रथम दिवस	द्वितीय दिवस
जैन धरोहर दिवस	**जैन धरोहर दिवस**
दिनांक : 26 अप्रैल 2026 रविवार	दिनांक : 27 अप्रैल 2025 सोमवार
अध्यक्षता	**अध्यक्षता**
श्रीमान कमल सिंह रामपुरिया	श्रीमान डा, शुभा मजूमदार
मुख्य अतिथि	**मुख्य अतिथि**
श्रीमान गजराज गंगवाल	श्रीमान प्रदीप चौपडा
समय	**समय**
दोपहर : 1:00 बजे से शाम 5:00 तक	दोपहरः 1:00 बजे से शाम 5:00 तक
स्थान	**स्थान**
धोनो धान्यो ऑडिटोरियम, अलीपुर, कोलकाता	चारुलता रिसॉर्ट, पंचकोट (पंचेत पहाड) जिला पुरुलिया (पश्चिम बंगाल)

आयोजक
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
नई दिल्ली

विनीत
सेठी ट्रस्ट
नई दिल्ली । गुवाहाटी । सिलचर

संयोजक
श्री दिगम्बर जैन समाज
कोलकाता

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92
Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on Every Monday, wednesday and thursday
डाक पंजीयन संख्या : SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh, Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233, 7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
....
....
....

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)
वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।